

मानिरूपा वाणी

मासिक ई-पत्रिका

सृजन

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुणीधार,
मानिला- 263 667 (अल्मोड़ा)



अंक- 09 | 2026-27

मई, 2026

विवशणिका

इस अंक में

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ सं०
1.	सम्पादक की कलम से...	i
2.	छात्र-छात्रा लेख अनुभाग	1
3.	प्राध्यापक लेख अनुभाग	2-21
4.	समसामयिकी	22-24
5.	मई माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रमुख प्रेरणादायी हस्तियाँ	25-26
6.	मई माह के प्रेरणादायी व्यक्तित्व (एक जीवन परिचय)	27-29
7.	मई माह के महत्वपूर्ण दिवस	30-34
8.	कलाकृति अनुभाग	35-36
9.	कुछ अनुशंसित पुस्तकें	37
10.	देश दुनिया के कुछ रोचक तथ्य	38-39
11.	रोजगार समाचार	40

संपादक काथ

मई की यह गुनगुनी धूप कैंपस के पेड़ों से छनकर जब खाली क्लासरूम्स पर पड़ती है, तो दिल में एक अजीब सी हलचल पैदा कर देती है। यह महीना कॉलेज कैलेंडर का सबसे भावुक पन्ना है। यहाँ कुछ रास्ते मुड़ रहे हैं, कुछ हाथ छूट रहे हैं, और कुछ पुरानी कॉपियों के आखिरी पन्नों पर दोस्ती के पक्के वादे लिखे जा रहे हैं। इसी मोड़ पर हमारी मैगजीन का यह अंक आपके हाथों में है, जिसका नाम है— **‘सृजन’**।

‘सृजन’ का अर्थ केवल नई चीजों को बनाना नहीं होता; सृजन का अर्थ बिखरी हुई यादों को समेटकर एक खूबसूरत भविष्य की नींव रखना भी है। हमारे जो साथी इस साल कॉलेज को अलविदा कह रहे हैं, वे यहाँ से सिर्फ एक डिग्री लेकर नहीं जा रहे, बल्कि अपने भीतर उन अनगिनत अनुभवों का सृजन करके जा रहे हैं जो उन्हें ज़िंदगी की हर धूप-छांव में संबल देंगे।

यह अंक गवाह है हमारी उस रचनात्मकता का जो असाइनमेंट्स के बोझ और परीक्षाओं के तनाव के बीच भी कभी कम नहीं हुई। इसमें हमारी अधूरी कविताएँ हैं, कैनवस पर उतरे कुछ नए रंग हैं और आने वाले कल के लिए बुने गए कुछ अनकहे ख्वाब हैं। आइए, इस मई की उदासी को पीछे छोड़ें और मिलकर एक नए अध्याय का सृजन करें।

पढ़िए, महसूस कीजिए और अपनी यादों को इस सृजन का हिस्सा बनाइए।

संपादक मण्डल:

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद (प्रधान सम्पादक)

डॉ० शैफाली सक्सेना (सह-सम्पादक)



छात्र-छात्रा

लेख अनुभवा

लास्ट बेंच का दर्शनशास्त्र

कॉलेज की सबसे रहस्यमयी और दार्शनिक जगह कौन सी है? लाइब्रेरी? नहीं, वो है क्लासरूम की 'लास्ट बेंच'। जब आगे की बेंचों पर बैठे प्रोफेसर साहब ब्लैकबोर्ड पर ज्ञान की नदियाँ बहा रहे होते हैं, तब लास्ट बेंच पर ब्रह्मांड के सबसे गहरे विचारों पर मंथन चल रहा होता है। 'लंच में क्या खाना है?', 'ये लेक्चर कब खत्म होगा?', या 'अगर अचानक क्लास में ज़ोंबी हमला हो जाए तो खिड़की से कैसे कूदना है?'—ये वो महान सवाल हैं जो सिर्फ एक बैक-बेंच ही सोच सकता है। लास्ट बेंच सिर्फ बैठने की जगह नहीं है, यह एक इमोशन है। यहाँ नींद का एक अलग ही सुकून है और पकड़े जाने का एक अलग ही थ्रिल। भले ही अटेंडेंस शॉर्ट हो जाए, लेकिन यहाँ जो यादें और जो दोस्ती बनती है, उसकी जीपीए (GPA) हमेशा 10/10 होती है।



बबीता

बी०एस-सी० 6 सेमे०

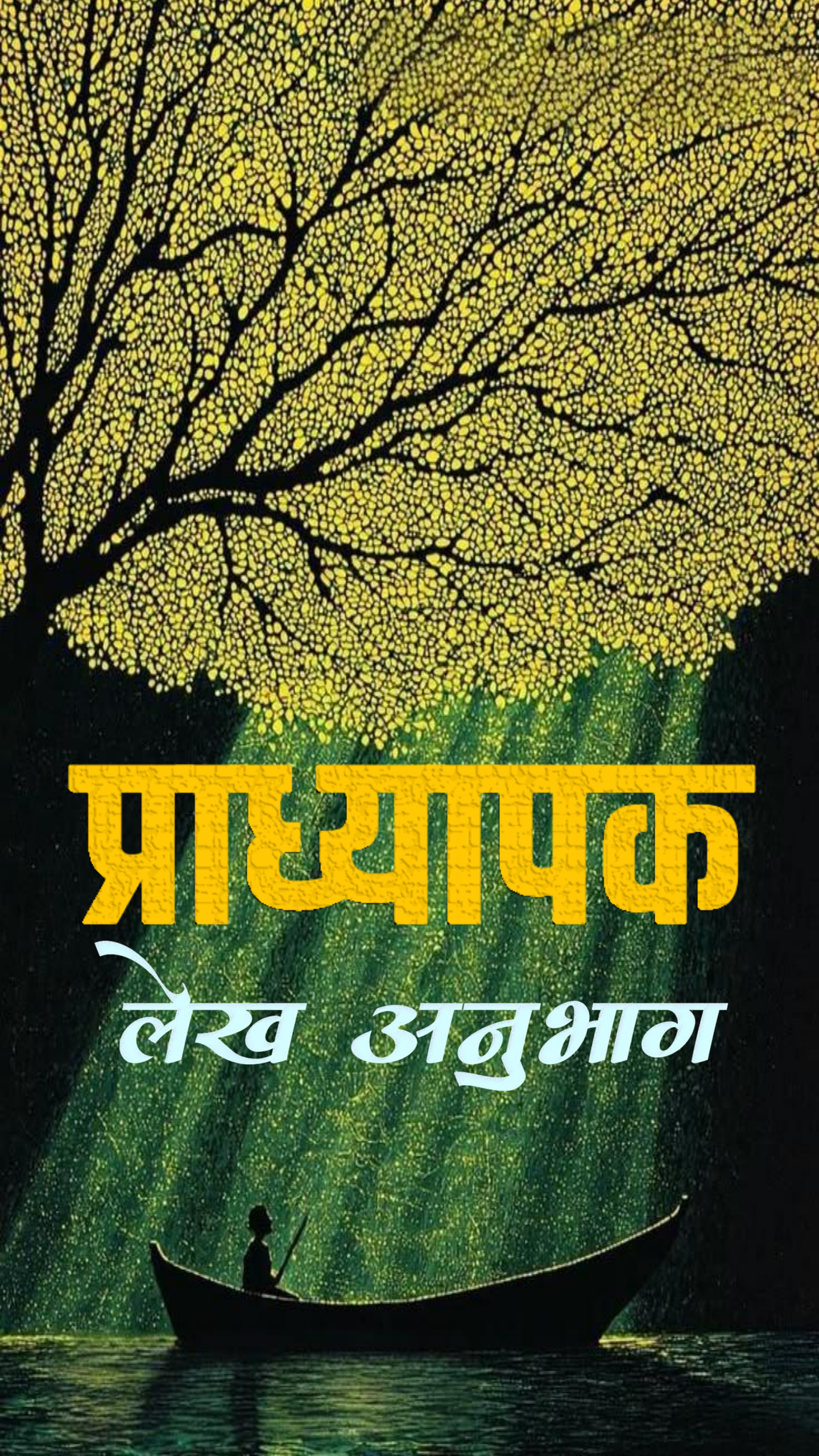
म्यूट पर चलती जिंदगी

हर क्लास का एक ऑफिशियल ग्रुप होता है और एक अनऑफिशियल। ऑफिशियल ग्रुप में सिर्फ प्रोफेसर के नोटिस आते हैं, जिसे सब अनदेखा करते हैं। लेकिन असली ड्रामा अनऑफिशियल ग्रुप में होता है। 'कल छुट्टी है क्या?', 'असाइनमेंट भेजा क्या?' जैसे सवालों की बाढ़ आ जाती है। मज़े की बात यह है कि ग्रुप में 10 बच्चे होते हैं, लेकिन बात सिर्फ 2 लोग ही करते हैं, बाकी सब म्यूट करके तमाशा देखते हैं।

शिवानी

बी०एस-सी० 6 सेमे०





प्राध्यापक

लेख अनुभाग

उत्तराखण्ड की लोक-संस्कृति

विविधता का एक सूक्ष्म संसार

संयुक्त राष्ट्र द्वारा हर वर्ष 21 मई को 'विश्व सांस्कृतिक विविधता संवाद और विकास दिवस' मनाया जाता है। इस दिवस की स्थापना 2002 में इसलिए की गई थी ताकि दुनिया के देश और समाज यह समझें कि सांस्कृतिक विविधता मानवता की सबसे बड़ी सम्पदा है, कोई समस्या नहीं। संयुक्त राष्ट्र का मानना है कि विश्व के तीन-चौथाई से अधिक सशस्त्र संघर्षों की जड़ में सांस्कृतिक असहिष्णुता है, और इसीलिए विविधता को समझना और उसका सम्मान करना केवल नैतिक आवश्यकता नहीं, बल्कि शांति की पूर्वशर्त है। इस वर्ष जब हम यह दिवस मना रहे हैं, तो हमारे पास एक ऐसा उदाहरण सामने है जो पूरी दुनिया को यह समझा सकता है कि विविधता किस रूप में जीवित रहती है, किस तरह साँस लेती है और किस प्रकार एक अखंड पहचान को अनेक धाराओं से सींचती है। वह उदाहरण है उत्तराखण्ड, भारत के उत्तर में हिमालय की गोद में बसा एक राज्य, जो अपने आप में विविधता का एक पूरा ब्रह्मांड है।

जब हम भारत की सांस्कृतिक विविधता की बात करते हैं, तो हमारी दृष्टि स्वाभाविक रूप से उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक फैल जाती है। हम केरल की कथकली और पंजाब के भांगड़े की तुलना करते हैं, राजस्थान के रंगों और कश्मीर की शांत घाटियों की बात करते हैं। लेकिन यह भूल जाते हैं कि विविधता का एक सूक्ष्म और अत्यंत सघन संसार हमारे एक ही राज्य में, कभी-कभी एक ही पहाड़ की दो ढलानों पर बसा होता है। उत्तराखण्ड ऐसा ही राज्य है। यहाँ एक ओर गढ़वाल की संस्कृति है, दूसरी ओर कुमाऊँ की; एक ओर जौनसार-बावर की प्राचीन जनजातीय परम्परा है, दूसरी ओर भोटिया समुदाय का तिब्बती सीमा से जुड़ा जीवन। थारू जनजाति के भाबर और तराई क्षेत्र की संस्कृति उसी राज्य में है जिसमें केदारनाथ की ऊँचाइयाँ हैं। यह वैविध्य न केवल आश्चर्यजनक है, बल्कि यह इस बात का प्रमाण है कि भूगोल और संस्कृति के बीच एक गहरा, जीवंत और सतत संवाद चलता रहता है।

गढ़वाल और कुमाऊँ

उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक विविधता को समझने का पहला सूत्र यह है कि राज्य के दो मंडल, गढ़वाल और कुमाऊँ, ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से भिन्न पृष्ठभूमियों से आए हैं। गढ़वाल क्षेत्र पर परमार वंश के राजाओं का शासन रहा और यह क्षेत्र प्रशासनिक दृष्टि से कुमाऊँ से अलग विकसित हुआ। कुमाऊँ पर चंद वंश का प्रभाव रहा और यहाँ की संस्कृति में नेपाल तथा तिब्बत के साथ व्यापारिक और सांस्कृतिक सम्पर्क की स्पष्ट छाप है। दोनों क्षेत्रों की भाषाएँ भी अलग हैं। गढ़वाली और कुमाउनी दोनों इंडो-आर्यन परिवार की भाषाएँ हैं, लेकिन इनका व्याकरण, शब्द-भंडार और उच्चारण इतने भिन्न हैं कि एक क्षेत्र का व्यक्ति दूसरे क्षेत्र की भाषा बिना अभ्यास के सहज नहीं समझ सकता। फिर भी दोनों भाषाओं में लोकगीतों की एक साझा आत्मा है जो पहाड़ के जीवन, उसकी कठिनाइयों, उसकी ऋतुओं और उसके देवताओं से उपजती है।

लोकगीत किसी भी संस्कृति का सबसे ईमानदार दस्तावेज होते हैं क्योंकि वे किसी राजदरबार या पाठशाला में नहीं बनते, बल्कि खेतों में, नदियों के किनारे, जंगलों में काम करते हुए बनते हैं। गढ़वाल का 'मंगलगीत' विवाह के अवसर पर गाया जाता है और इसमें प्रकृति, परिवार और परमात्मा तीनों का अब्दुत संगम है। कुमाऊँ का 'झोड़ा' और 'चाँचरी' सामूहिक गायन की परम्पराएँ हैं जो यह बताती हैं कि यहाँ की संस्कृति में व्यक्ति और समाज के बीच की रेखा कभी बहुत तीखी नहीं रही। 'न्यौली' कुमाऊँ की एक ऐसी विरह-शैली है जिसमें पहाड़ की स्त्री अपने एकांत को, अपने प्रियजन की अनुपस्थिति को, शब्दों में नहीं, स्वरो में उँडेलती है।

(3)

नेंद्र सिंह नेगी, जिन्हें उत्तराखंड का सांस्कृतिक राजदूत कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, उनके गढ़वाली गीतों ने पलायन, पहाड़ और पहचान के सवाल को जिस संवेदनशीलता से उठाया है, वह इस बात का प्रमाण है कि लोकसंगीत सामाजिक आलोचना का भी सशक्त माध्यम बन सकता है। प्रीतम भरतवाण ने भी इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए लोक और समकालीन के बीच की दूरी को पाटने का काम किया है।

जौनसार-बावर

देहरादून जिले के पश्चिमी हिस्से में स्थित जौनसार-बावर क्षेत्र उत्तराखंड की सांस्कृतिक विविधता का एक ऐसा आयाम है जिसे मुख्यधारा की चर्चाओं में अक्सर उपेक्षित किया जाता है। यहाँ जौनसारी जनजाति निवास करती है जिसकी संस्कृति हिमाचल प्रदेश की जनजातीय परम्पराओं से गहरे रूप से जुड़ी है। जौनसारी समाज में बहुपति प्रथा की ऐतिहासिक उपस्थिति रही है जो महाभारत के पाण्डवों की परम्परा से जोड़कर देखी जाती है। यहाँ के देवता, उनकी पूजा-पद्धति और उत्सव की संरचना शेष उत्तराखंड से इतनी भिन्न है कि एक शोधार्थी के लिए यह एक सर्वथा अलग सांस्कृतिक जगत है।

जौनसार के 'हारुल' नृत्य में एक ऐसी तरंग है जो देखने वाले को महसूस कराती है कि यह केवल शरीर का नहीं, आत्मा का नृत्य है। 'हारुल' में पुरुष और स्त्री दोनों मिलकर एक लयबद्ध गति में इस तरह एकाकार हो जाते हैं कि व्यक्ति और समूह का भेद मिट जाता है। यहाँ का 'पाँडव नृत्य' और 'रासो' महाभारत के पात्रों को जीवंत कर देते हैं और सामुदायिक स्मृति का यह रूप इतना शक्तिशाली है कि बाहर से आया हुआ व्यक्ति भी उसमें अनजाने ही भागीदार हो जाता है। जौनसारी वास्तुकला भी विशिष्ट है। लकड़ी और पत्थर से बने बहुमंजिले मकान, जिनमें पशुओं, अनाज और परिवार तीनों के लिए अलग-अलग तल होते हैं, एक ऐसे समाज की कहानी कहते हैं जिसने पर्यावरण के साथ समझौते से नहीं, समझ से जीना सीखा।

भोटिया समुदाय

पिथौरागढ़ जिले के सीमावर्ती क्षेत्रों में, धारचूला, मुनस्यारी, व्यास घाटी और दारमा घाटी में भोटिया समुदाय निवास करता है। ये वही लोग हैं जिन्होंने सदियों तक लिपुलेख, दारमा और व्यास दर्रे के रास्ते तिब्बत के साथ व्यापार किया। उन, नमक, याक-मक्खन, बोरेक्स और जड़ी-बूटियों का यह व्यापार केवल आर्थिक लेन-देन नहीं था; यह दो सभ्यताओं के बीच एक सतत सांस्कृतिक संवाद था। भोटिया समुदाय ने तिब्बती बौद्ध धर्म और हिंदू परम्परा दोनों से तत्त्व ग्रहण किए और एक ऐसी मिश्रित पहचान विकसित की जो किसी एक वर्गीकरण में आसानी से नहीं आती।

भोटिया परिवारों में यह परम्परा थी कि गर्मियों में वे ऊँचे चारागाहों और तिब्बती मंडियों की ओर प्रस्थान करते और सर्दियों में नीचे उतर आते। इस ऋतु-प्रवास की जीवनशैली ने उनकी संस्कृति को एक विशेष लचीलापन दिया। उनके वस्त्र, आभूषण और आवास दोनों तरफ की संस्कृतियों का सम्मिश्रण हैं। भोटिया बुनकरों की ऊनी शॉर्ले और दन, जो पश्मीना और भेड़ की ऊन से बनती थीं, कभी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का हिस्सा थीं। 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद जब सीमा बंद हो गई, तो भोटिया समुदाय के जीवन पर जो प्रभाव पड़ा वह केवल आर्थिक नहीं था। उनकी सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा, जो तिब्बत से जुड़ाव से बनता था, उन दशकों में धुँधला पड़ गया। 1992 में व्यापार का आंशिक पुनरारम्भ हुआ और 2026 में लिपुलेख दर्रे के पुनः खुलने से उस जुड़ाव की कुछ लौ फिर से जलती दिख रही है।

थारू जनजाति

उत्तराखंड की सांस्कृतिक विविधता केवल पहाड़ों तक सीमित नहीं है। राज्य के भाबर और तराई क्षेत्र में, विशेषकर उधम सिंह नगर और नैनीताल जिलों के मैदानी हिस्सों में, थारू जनजाति निवास करती है। थारू जनजाति की उपस्थिति नेपाल की तराई से लेकर उत्तर प्रदेश तक फैली हुई है, लेकिन उत्तराखंड के थारू समुदाय की अपनी सांस्कृतिक विशिष्टताएँ हैं। उनकी भाषा, लोककथाएँ और कला-शैली उन्हें पहाड़ की जनजातियों से सर्वथा भिन्न बनाती है। थारू घरों की भित्तियों पर की जाने वाली चित्रकारी और 'गोदना' अर्थात् गोदने की परम्परा प्रकृति और जीवन की उस गहरी समझ को व्यक्त करती है जो पीढ़ियों के अनुभव से बनी है।

थारू उत्सव परम्पराएँ भी विशिष्ट हैं। उनका 'अठवारी' पर्व, उनके देवी-देवता, और सामाजिक संगठन का ढाँचा यह दर्शाता है कि एक ही राज्य में कितने अलग-अलग जीवन-दर्शन एक साथ जीवित रह सकते हैं। थारू महिलाओं की बुनाई और कढ़ाई की कला विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनके वस्त्रों में जो प्रतीक और रंग आते हैं, वे उस वनाच्छादित संसार की स्मृतियाँ हैं जिसमें थारू समुदाय ने मलेरिया जैसी महामारियों को झेलते हुए भी सदियों तक अपना अस्तित्व बनाए रखा। लेकिन आज भूमि-उपयोग में परिवर्तन, वनों की कटाई और तेजी से फैलते शहरीकरण ने थारू समुदाय की भाषा और संस्कृति को संकट में डाल दिया है।

लोक देवता

उत्तराखंड की सांस्कृतिक विविधता का शायद सबसे जीवंत और अनोखा पक्ष उसकी लोक देवता परम्परा है। यहाँ के देवता किसी एक धर्मग्रंथ से नहीं आए। वे स्थानीय नायकों, ऐतिहासिक व्यक्तित्वों और प्राकृतिक शक्तियों के रूप में लोकचेतना से उभरे।

(4) गढ़वाल में 'गोलू देवता' न्याय के देवता के रूप में पूजे जाते हैं। अल्मोड़ा के चितई मंदिर में लाखों याचिकाएँ और घंटियाँ टँगी मिलती हैं जो इस देवता से इंसानों माँगती हैं। यह एक ऐसी परम्परा है जो राज्य की न्यायपालिका और लोक आस्था को एक ही बिंदु पर मिला देती है।

कुमाऊँ में 'ऐपण' की परम्परा है जो घर की देहरी, आँगन और पूजाघर में बनाए जाने वाले विशिष्ट चित्रों की परम्परा है। लाल और सफेद रंग के ज्यामितीय और प्राकृतिक प्रतीकों से बने ये चित्र केवल सजावट नहीं हैं; इनका प्रत्येक प्रतीक एक आध्यात्मिक और सामाजिक अर्थ रखता है। गढ़वाल में 'जागर' नामक अनुष्ठान में लोक देवताओं का आह्वान किया जाता है। यह अनुष्ठान रात भर चलता है, इसमें ढोल-दमाऊँ की थाप पर गाए जाने वाले आह्वान-मंत्र, 'डंगरिया' में देवता का प्रवेश और समुदाय का सामूहिक अनुभव एक ऐसी घटना बनाते हैं जिसे न केवल धर्म की दृष्टि से, बल्कि सामुदायिक मनोविज्ञान और सामाजिक एकजुटता की दृष्टि से भी समझा जाना चाहिए।

हस्तशिल्प और वस्त्र

उत्तराखंड के हस्तशिल्प में भी इस विविधता की स्पष्ट छाप है। कुमाऊँ की 'ऐपण' कला, 'रिंगाल' की टोकरियाँ और बर्तन, 'पिछोड़ा' जैसे पारम्परिक पूजा-वस्त्र, गढ़वाल के ताम्बे और पीतल के पात्र, तथा जौनसार के लकड़ी की नक्काशीदार खिड़कियाँ और द्वार, प्रत्येक क्षेत्र की अपनी सौंदर्य-दृष्टि का प्रमाण हैं। भोटिया बुनकरों की दन, शॉल और पंखी, जो ऊँचे पहाड़ों की भेड़ों और चाँगथंगी बकरियों की ऊन से बनाई जाती थीं, अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में भी अपनी पहचान रखती थीं। यह शिल्प 1962 के बाद के दशकों में लगभग विलुप्त हो गया क्योंकि तिब्बत के साथ व्यापार बंद हो गया था। आज उसे पुनर्जीवित करने के प्रयास हो रहे हैं, लेकिन किसी शिल्प की आत्मा तब तक वापस नहीं आती जब तक उसे जीवंत रखने वाली पूरी सामाजिक संरचना फिर से सक्रिय न हो जाए।

संकट और संरक्षण

उत्तराखंड की यह सांस्कृतिक विविधता आज एक गंभीर संकट के दौर से गुजर रही है। पलायन इस संकट का सबसे बड़ा कारण है। राज्य के हजारों गाँव या तो पूरी तरह रिक्त हो चुके हैं या उनमें केवल वृद्ध शेष बचे हैं। जब कोई गाँव खाली होता है, तो केवल घर नहीं छूटते; उनके साथ एक पूरी सांस्कृतिक स्मृति भी चली जाती है। जो पीढ़ी देहरादून, दिल्ली या हल्द्वानी में बस जाती है, वह गढ़वाली या कुमाउनी बोलती तो है, लेकिन उन शब्दों में वह मिट्टी नहीं रहती जो उन्हें जीवित रखती थी। भाषाविद् मानते हैं कि जब कोई भाषा अपने मूल परिवेश से कट जाती है, तो वह धीरे-धीरे एक संग्रहालय की वस्तु बन जाती है, देखने के लिए, बोलने के लिए नहीं।

दूसरा बड़ा संकट वैश्वीकरण और डिजिटल संस्कृति से आ रहा है। जागर की रात भर चलने वाली अनुष्ठान-परम्परा और रील पर तीस सेकंड की वीडियो एक ही समय में जीवित नहीं रह सकती, यह तनाव वास्तविक है। जब तक लोक-संस्कृति को जीविका का आधार और सामाजिक सम्मान नहीं मिलता, तब तक उसे केवल भावनात्मक अपील से बचाया नहीं जा सकता। नरेंद्र सिंह नेगी और प्रीतम भरतवाण जैसे कलाकारों ने यह साबित किया है कि लोक-संगीत समकालीन भी हो सकता है, वह नई पीढ़ी तक पहुँच सकता है, लेकिन इसके लिए ज़रूरी है कि उसे उसी भाषा में और उसी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया जाए जिससे वह पैदा हुआ।

सकारात्मक पहलें भी हो रही हैं। कई संगठन और व्यक्ति लोकसंगीत, लोककला और जनजातीय भाषाओं के दस्तावेजीकरण में लगे हैं। कुमाउनी और गढ़वाली को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की माँग वर्षों से उठती रही है और यह माँग केवल भाषाई नहीं, सांस्कृतिक अस्तित्व की माँग है। 'ऐपण' को जीआई टैग दिलाने और उसे आधुनिक उत्पादों में स्थान देने के प्रयास हो रहे हैं। रिंगाल और भोटिया ऊन-शिल्प को हस्तशिल्प बोर्ड के माध्यम से बाज़ार से जोड़ने की कोशिशें जारी हैं। ये सब क़दम सही दिशा में हैं, लेकिन उनकी गति उस संकट के अनुपात में अपर्याप्त है जिससे यह संस्कृतियाँ गुजर रही हैं।

विश्व विविधता दिवस और उत्तराखंड का सन्देश

21 मई का विश्व सांस्कृतिक विविधता दिवस हमें यह याद दिलाता है कि विविधता कोई समस्या नहीं जिसे हल किया जाए, बल्कि एक सम्पदा है जिसकी देखभाल की जाए। उत्तराखंड इस विचार का सबसे स्पष्ट और जीवंत उदाहरण है। यहाँ गढ़वाली और कुमाउनी एक साझा उत्तराखंडी पहचान में मिलते हैं, लेकिन अपनी विशिष्टता नहीं खोते। भोटिया समुदाय भारत का नागरिक है, लेकिन उसकी आत्मा में तिब्बत की हवा भी बसती है। जौनसारी जनजाति का हारुल हिमाचल की परम्परा से भी जुड़ता है। थारू समुदाय का सम्बंध नेपाल की तराई की संस्कृति से भी है। यह सब एक साथ एक राज्य में जीवित है।

सांस्कृतिक विविधता और जैव विविधता अक्सर साथ-साथ चलती हैं। जिन समुदायों की अपनी विशिष्ट संस्कृति होती है, उनके पास अपने पर्यावरण का पारम्परिक ज्ञान भी होता है। भोटिया समुदाय औषधीय वनस्पतियों के बारे में जो जानता है, वह किसी विश्वविद्यालय की पाठ्यपुस्तक में नहीं मिलता। जौनसारी किसान जो परम्परागत बीज और कृषि पद्धतियाँ जानता है, वे हिमालय की उस जलवायु के लिए अनुकूलित हैं जिसे आधुनिक कृषि विज्ञान अभी समझने की कोशिश कर रहा है। इस ज्ञान को खोना केवल सांस्कृतिक क्षति नहीं होगी; यह एक वैज्ञानिक और पारिस्थितिक क्षति होगी।

(5)

उत्तराखण्ड की लोक-संस्कृति यह सिखाती है कि विविधता का अर्थ बिखराव नहीं है। विविधता का अर्थ है उस बहुलता को स्वीकार करना जिसमें प्रत्येक धारा अपनी गति और अपना रंग बनाए रखती है, लेकिन सब मिलकर एक ही नदी बनाती हैं। जब हम 21 मई को विश्व सांस्कृतिक विविधता दिवस मनाते हैं, तो हमें यह भी सोचना चाहिए कि इस विविधता को मनाना पर्याप्त नहीं है। उसे बचाना होगा, उसे जीना होगा और उसे भविष्य की पीढ़ियों के लिए सौंपना होगा। हिमालय की यह सूक्ष्म सांस्कृतिक दुनिया समूची मानवता को यह याद दिलाती है कि महानता केवल विशालता में नहीं होती; कभी-कभी वह एक छोटी-सी घाटी में, एक पुराने जागर के स्वर में, एक देहरी पर बने ऐपण के चित्र में और एक न्यौली की थिरकती लय में भी होती है।

डॉ० कविन्द्र भट्ट
असिस्टेंट प्रोफेसर
अंग्रेजी विभाग



धरती की गूंज

प्रदूषण के इस धुएं में, सांसें अब घुटने लगी हैं,
काटकर पेड़ इंसानों ने, खुद अपनी ही जड़ें हरी हैं।
प्लास्टिक के इस जाल से, नदियां भी अब रोती हैं,
प्रकृति की हर एक सीख, हमें सजग ये करती है।

जागो युवाओं अब संभलो, ये धरती हमारी माता है,
इसके हरे-भरे आंचल से ही, हमारा जीवन नाता है।
एक पौधा आज लगाओ तुम, पर्यावरण को बचाओ तुम,
जिम्मेदारी समझकर अपनी, इस सृष्टि को महकाओ तुम।

NANOPARTICLES

IN THE DIAGNOSIS OF Tuberculosis

Tuberculosis (TB) remains one of the world's most serious infectious diseases, affecting millions every year. Caused by the bacterium *Mycobacterium tuberculosis*, TB primarily targets the lungs but can also affect other parts of the body. Early and accurate diagnosis is essential for effective treatment and control. In recent years, **nanotechnology** has emerged as a promising tool in revolutionizing TB diagnosis, offering faster, more sensitive, and highly accurate detection methods.

What are Nanoparticles?

Nanoparticles are extremely small particles, typically ranging from 1 to 100 nanometers in size. Due to their tiny size and large surface area, they exhibit unique physical and chemical properties. These features make nanoparticles highly suitable for medical applications, especially in detecting diseases at an early stage.

Why is TB Diagnosis Challenging?

Traditional methods of TB diagnosis include sputum smear microscopy, chest X-rays, and culture tests. Although widely used, these methods have limitations:

- Low sensitivity in early-stage infections
- Time-consuming procedures (culture tests may take weeks)
- Difficulty in detecting drug-resistant strains

To overcome these challenges, modern techniques incorporating nanotechnology are being developed.

Role of Nanoparticles in TB Diagnosis

Nanoparticles enhance diagnostic techniques by improving sensitivity, specificity, and speed. Some key applications include:

1. Gold Nanoparticles (AuNPs)

Gold nanoparticles are widely used due to their optical properties. They can detect TB DNA or proteins through visible color changes, making diagnosis simple and rapid.

2. Magnetic Nanoparticles

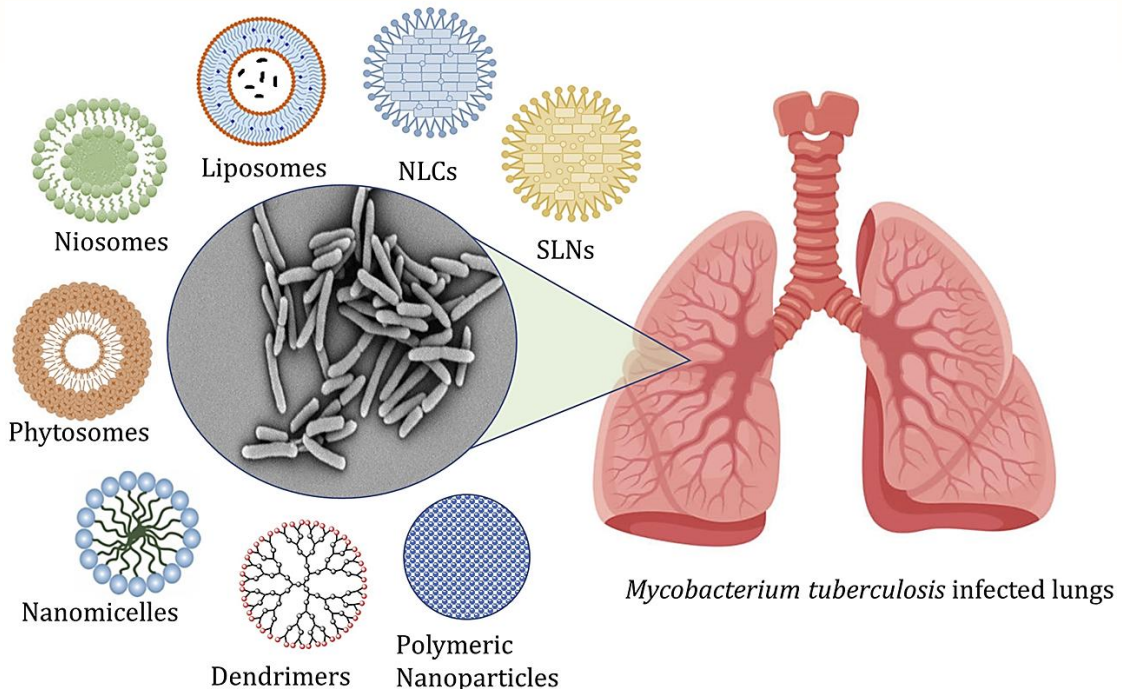
These nanoparticles help in isolating and concentrating TB bacteria from patient samples. This improves detection accuracy, especially in low bacterial load conditions.

3. Quantum Dots

Quantum dots are fluorescent nanoparticles that emit light when exposed to radiation. They are used in imaging and biosensing to detect TB biomarkers with high precision.

4. Biosensors and Nano-chips

Nanoparticles are integrated into biosensors that can identify TB bacteria in minutes. These devices are portable and suitable for use in remote or resource-limited areas.



Nanotechnology-Based Diagnostic Techniques

One of the most advanced diagnostic tools is the GeneXpert MTB/RIF system. While not purely nanoparticle-based, it reflects the shift toward rapid molecular diagnostics. Emerging nano-based tests aim to go even further by reducing cost and increasing accessibility. Another promising area is the use of nanoparticle-based lateral flow assays, similar to rapid test kits, which provide quick results without requiring complex laboratory setups.

Advantages of Using Nanoparticles

- **High Sensitivity:** Detects even small amounts of TB bacteria
- **Rapid Results:** Reduces diagnosis time from weeks to minutes or hours
- **Portability:** Suitable for field use in rural areas
- **Cost-Effective:** Potential for affordable diagnostic kits
- **Early Detection:** Helps in timely treatment and reduces disease spread

Challenges and Future Prospects

Despite their advantages, nanoparticle-based diagnostics face certain challenges:

- High initial development costs
- Need for standardization and regulatory approval
- Limited availability in low-income regions

However, ongoing research supported by organizations like World Health Organization continues to improve these technologies. In the future, nanoparticle-based diagnostics may become the standard method for TB detection worldwide.

Conclusion

Nanoparticles are transforming the landscape of tuberculosis diagnosis by making it faster, more accurate, and accessible. As technology advances, these tiny particles hold the potential to make a significant impact in global health. By enabling early detection and effective treatment, nanotechnology could play a crucial role in reducing the burden of tuberculosis and moving closer to its eradication.

Dr. Anju Nigam
Assistant Professor
Department of Physics

BANARAS

A Living Confluence of Spirituality, Culture, and Tradition

Visual Journey Through the Eternal City of Kashi

Varanasi, popularly known as “**Banaras**” or “**Kashi**” is one of the oldest continuously inhabited cities in the world and is often regarded as the spiritual capital of India. Situated on the sacred banks of the River Ganga, this ancient city is a unique blend of faith, history, art, culture, and traditions. For centuries, Banaras has attracted pilgrims, scholars, artists, and travellers from across the globe who come seeking spiritual enlightenment and cultural experiences. The photographs presented here capture different facets of Banaras its sacred temples, mesmerizing Ganga Aarti, traditional crafts, local cuisine, and breath-taking riverfront views.



The spiritual Essence of Kashi

Banaras is often referred to as the “**City of Lord Shiva**” According to Hindu beliefs, Kashi has long been regarded as one of the holiest cities in Hinduism and holds a unique place in India's spiritual landscape.

Deeply associated with Lord Shiva, the city is believed to be under his divine protection and is revered as a sacred gateway to spiritual liberation (*moksha*). For countless devotees, Kashi represents a place where the earthly and the divine come together. At the heart of this spiritual tradition stands the revered Kashi Vishwanath Temple, one of the most important Jyotirlingas dedicated to Lord Shiva. The temple attracts millions of pilgrims every year who come to seek blessings, offer prayers, and strengthen their spiritual connection. The presence of the sacred River Ganga further enhances the religious significance of the city, symbolizing purity, renewal, and divine grace.



Kashi Vishwanath Temple

The spiritual identity of Kashi is also reflected in its daily rituals, sacred ceremonies, and centuries-old traditions. From the chanting of Vedic hymns in temples to the prayers offered along the ghats, every aspect of life in the city is infused with devotion.

The Ghats of Banaras: Where Life Meets the Sacred River

The ghats of Banaras are among its most iconic landmarks. Stretching along the banks of the River Ganga, these ghats serve as centers of worship, cultural activities, spiritual reflection, and daily life. Each ghat possesses its own historical and religious significance, contributing to the unique identity of the city. Among the most prominent is “**Assi Ghat**”, located at the confluence of the Ganga and the Assi River. It is known for its peaceful atmosphere, morning yoga sessions, and cultural programs, making it a favourite destination for both pilgrims and tourists. “**Manikarnika Ghat**” holds immense spiritual importance as one of the holiest cremation grounds in Hinduism. It is believed that those cremated here attain *moksha* (liberation from the cycle of birth and death). The eternal flame that burns continuously at the ghat symbolizes the timeless spiritual traditions of Kashi.



Dashashwamegh Ghat

Ganga Aarti: A Grand Celebration of Faith

One of the most captivating traditions of Banaras is the **Ganga Aarti**, held every evening at the renowned “**Dashashwamegh Ghat**”.

This grand ceremony is one of the most important spiritual attractions of the city and draws thousands of devotees, pilgrims, and tourists from across the world. During the Aarti, priests dressed in traditional attire perform synchronized rituals using large brass lamps, incense burners, conch shells,

and sacred chants. The rhythmic ringing of bells, the sound of Vedic hymns, and the glow of countless flames create a mesmerizing and deeply spiritual atmosphere along the riverfront. While Dashashwamegh Ghat hosts the most famous Aarti, devotional ceremonies are also performed at **Assi Ghat**, where visitors can experience a more serene and intimate spiritual environment. Together, these ceremonies reflect the deep reverence that the people of Banaras hold for the River Ganga, considered a divine mother and source of purification. The Ganga Aarti is much more than a religious ritual; it is a celebration of faith, gratitude, and cultural heritage. It symbolizes the eternal bond between the city of Kashi and the sacred Ganga, leaving a lasting impression on all who witness its grandeur.

Banarasi Sarees: The Pride of Indian Handloom



Banarasi Saree

Among Banaras most celebrated cultural treasures are its world-famous **Banarasi sarees**, featured prominently in the photographs. Known for their intricate weaving, luxurious silk, and exquisite **Zari work**, these sarees represent the pinnacle of Indian craftsmanship. Creating a Banarasi saree requires exceptional skill, patience, and dedication. Master weavers spend weeks or even months producing a single piece, carefully crafting intricate patterns inspired by nature, architecture, and traditional motifs. Today, Banarasi sarees are recognized globally and remain a symbol of elegance, tradition, and cultural pride. They continue to play a significant role in Indian weddings and festive celebrations.

Culinary Delights of Banaras

No exploration of Banaras is complete without experiencing its rich culinary heritage. The photographs showcasing traditional dishes and local delicacies provide a glimpse into the city's vibrant food culture. Banaras is famous for its kachori-sabzi, chaat, malaiyyo, thandai, the iconic **Banarasi paan (Maghai Paan)**, and the traditional **Baati Chokha**, a beloved dish of the region. Baati Chokha consists of roasted wheat dumplings served with a flavourful mixture of mashed roasted vegetables such as eggplant, tomatoes, and potatoes. Known for its rustic taste and nutritional value, it represents the culinary traditions of eastern Uttar Pradesh and the neighbouring regions.



Maghai Paan



Baati Chokha

It is widely enjoyed by locals and visitors alike and reflects the simplicity and authenticity of rural Indian cuisine. Banaras is also renowned for its street food culture. From crispy kachoris served with spicy potato curry to tangy tomato chaat and refreshing thandai, the city offers an extraordinary variety of Flavors. The famous Banarasi paan, known for its unique preparation and rich taste, has become a cultural symbol of the city. These dishes are deeply rooted in local traditions and have been enjoyed by generations of residents and visitors alike. Food in Banaras is not merely about taste; it is a reflection of the city's hospitality, cultural diversity, and rich heritage. Every lane, marketplace, and food stall offers unique Flavors that contribute to the unforgettable experience of visiting this historic city.

The River Ganga: Lifeline of Banaras

The photographs featuring boats, bridges, and the flowing Ganga emphasize the river's central role in the life of Banaras. For centuries, the Ganga has been a source of spiritual inspiration, livelihood, and cultural continuity. Boat rides on the river offer some of the most spectacular views of the city. From the water, one can witness the grandeur of the ghats, the beauty of the temples, and the daily rhythm of life unfolding along the riverbanks. The relationship between Banaras and the Ganga is inseparable. The river is not only a geographical feature but also a symbol of purity, faith, and eternal continuity.

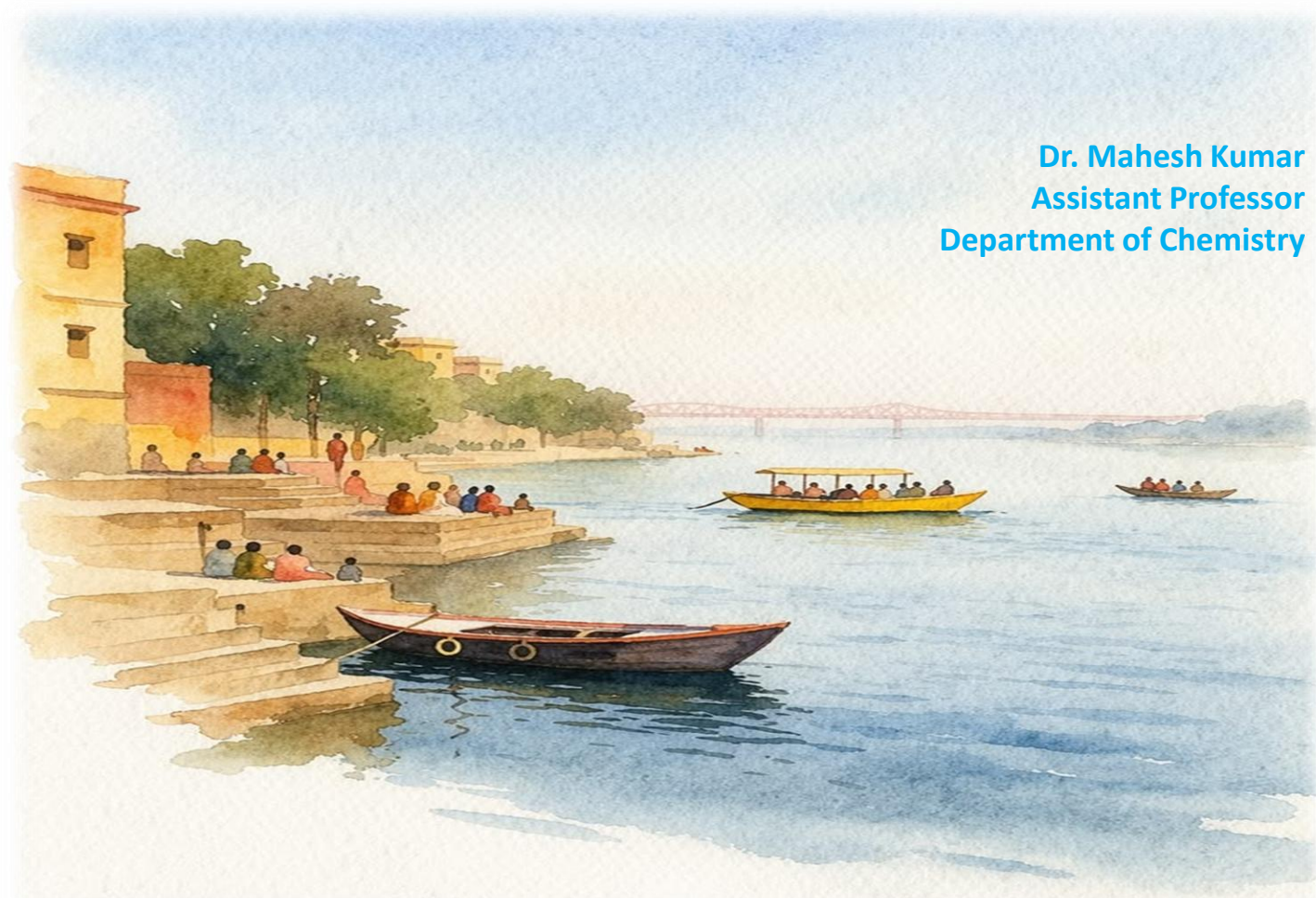
Conclusion

Banaras is far more than a city; it is a timeless embodiment of India's spiritual, cultural, and historical legacy. From the sacred ghats of the Ganga and the grandeur of its ancient temples to the mesmerizing Ganga Aarti, exquisite Banarasi sarees, and rich culinary traditions, every aspect of the city reflects a heritage that has flourished for centuries. The photographs presented in this collection capture the many dimensions of Banaras its devotion, artistry, traditions, and everyday life. They portray a city where ancient customs seamlessly coexist with modern aspirations, where faith shapes daily existence, and where every corner tells a story of history and resilience. Whether one witnesses the spiritual fervour of Dashashwamegh Ghat, the tranquillity of Assi Ghat, the profound significance of Manikarnika and Harishchandra Ghats, or the beauty of the Ganga at sunrise and sunset, Banaras leaves an unforgettable impression on the mind and soul. More than a destination, it is a living experience one that inspires reflection, celebrates cultural diversity, and remains etched in the hearts of all who visit.

"Banaras is not merely a place on a map; it is a timeless journey through faith, culture, and the soul of India."



Dr. Mahesh Kumar
Assistant Professor
Department of Chemistry





LIPULEKH REOPENS

A New Chapter for Kumaon's Himalayan Frontier

There is a certain peculiarity about mountains. They are simultaneously the most permanent features of a landscape and the most contested. They divide and connect, they obstruct and invite. Few places in the Indian subcontinent embody this paradox as fully as Lipulekh Pass, a narrow gap in the ridge of the Kumaon Himalayas that has functioned, for as long as there is recorded memory, as a corridor between civilisations. In 2026, after nearly six years of closure, this corridor is opening again, and the significance of that reopening stretches far beyond any single diplomatic communiqué or ministerial handshake.

Lipulekh Pass is a high-altitude mountain pass located in the Kumaon region of Uttarakhand, near the trijunction of India, Nepal, and China, linking the Indian state of Uttarakhand with the Tibet region of China. It lies at an altitude of approximately 5,334 metres. In Uttarakhand, Lipulekh Pass comes under the Chaudans valley of Dharchula, a sub-district of Pithoragarh district, where it links with the Byash Valley of Nepal and with Tibet. These are the bare coordinates, but they capture nothing of what the pass actually is to the people who live in its shadow, who have crossed it on foot with pack animals loaded with wool and grain, who have looked out from its ridge and seen, on clear days, the faint silhouette of Mount Kailash rising above the Tibetan plateau.



Map of Lipulekh Pass

The history of human movement through Lipulekh is ancient and layered. The Lipulekh Pass functioned as a principal artery in trans-Himalayan barter trade between the Kumaon region of India and western Tibet prior to the mid-twentieth century, enabling merchants to transport goods directly to the market town of Taklakot, known also as Purang. Traders exchanged Tibetan commodities such as salt, wool, borax, and yak tails for Indian items including grains, spices, textiles, and metalware, with caravans navigating the pass seasonally during summer months when snow melt permitted access. The terms of this exchange were, by any measure, remarkable in their complexity. Old timers recall forebears leading trade expeditions all the way up to Gartok in Tibet with hundreds of pack animals and scores of head-loaders. They would carry wheat, tea, shawls, blankets, woven cloth, tobacco, and utensils from India to Tibet, exchange these for wool and rock salt, take the rock salt to Nepal, and pick up rice, millets, honey, herbs, and dry fruits on the return route. This was not simply commerce; it was an entire ecological and economic system sustaining high-altitude communities across three countries.

The community most intimately tied to this system is the Bhotia, or Bhotiya, known locally in the Byans valley as the Rung or Byansi people. The Bhotiya community in Uttarakhand, an indigenous group with trans-Himalayan ties, historically depended on cross-border trade through Lipulekh. The exchange of salt, wool, and other goods sustained livelihoods and cultural connections with Tibet. The local Bhotia community living in villages such as Kuti, Nabi, and Gunji played an important role in Himalayan trade and also helped pilgrims travelling to sacred destinations in Tibet. Their cultural identity was inseparable from the pass. To be Bhotia in the Byans valley was, for generations, to be someone who went to Tibet in summer, who knew the rhythms of the Lipulekh route, who kept one foot on the Indian side and the other, figuratively and literally, in the world beyond the ridge.

The formal institutionalisation of this trade came in 1954, when the Agreement on Trade and Intercourse Between Tibet Region and India was signed by China and India in Beijing on 29 April 1954, embedding the Panchsheel principles of peaceful coexistence. The agreement specifically designated Lipulekh as one of the recognised passes for bilateral exchanges. This formalisation was significant, but as the traders themselves always insisted, the 1954 agreement only formalised the extant customary rights and privileges of the Rung, Khas, Kumaoni, Dotyali, and Bhotia communities who lived at this trijunction of India, Nepal, and Tibet. The treaty gave legal language to something that had existed long before any state had thought to codify it.

Then came 1962. The Sino-Indian War brought this entire world to a sudden, violent stop. The closure of borders following the 1962 Sino-Indian War disrupted these networks, leading to economic decline and cultural dislocation for the Bhotiyas. The traditional trade with Tibet had been closed after the 1962 border conflict between the two countries. Along with the closure of the route went the broader cultural economy it had supported. After the 1962 war, trade came to a grinding halt, and along with that, the tradition of spinning yarn and weaving carpets, blankets, and warm clothing. Three decades of enforced silence followed, during which the villages along the Lipulekh corridor experienced steady depopulation, economic marginalisation, and the gradual dissolution of practices that had defined them for centuries.

The reopening in 1992 was, therefore, more than a trade arrangement. Lipulekh Pass was the first Indian border post opened for trade with China in 1992. The border trade was resumed in 1992 to promote the tribal economy of the Bhotia community living in this part of the Himalayas, who had been dependent on it for many centuries. In the seasons that followed, the pass came alive again each summer. The pass is open for cross-border trade every year from June to September. Border trade between the two countries was conducted for five months from June to October at Taklakot mart in western Tibet on the Chinese side, with Indian traders exporting commodities like tea, coffee, jaggery, sugar candy, tobacco products, and cosmetics, and importing raw Tibetan wool, readymade garments, shoes, and cement bags. The scale was never enormous in absolute terms, but its significance to the communities of Pithoragarh district was disproportionately large. By 2012, Indian traders imported goods worth Rs 2.78 crore from Tibet and exported items worth Rs 81.15 lakh to Tibetan traders during a single five-month trading season through the Lipulekh Pass.

The Kailash Mansarovar Yatra is the other great dimension of Lipulekh's identity, and in many ways it is the one that resonates most deeply with Indians beyond the border districts. Lipulekh Pass has been a long-standing route for the Kailash-Mansarovar Yatra since 1954, and the Yatra through this route has been going on for decades. The Lipulekh Pass trek is not merely an adventure; it is a sacred Himalayan pilgrimage that takes pilgrims to Adi Kailash and Om Parvat, two of the most revered destinations associated with Lord Shiva, and the route historically served traders and pilgrims heading to Kailash Mansarovar. Om Parvat, where snow naturally forms the sacred symbol of Om, is believed according to legend to be one of only eight such mountains in the world sculpted by Lord Shiva. From there, travellers venture to the high-altitude Lipulekh Pass, which stands at approximately 5,334 metres and serves as a gateway and viewpoint to Mount Kailash. The spiritual geography of this corridor, the sequence of sacred sites from Jageshwar to Patal Bhuvaneshwar to Adi Kailash to the pass itself, constitutes one of the most coherent pilgrimage landscapes in northern India, one that has drawn seekers for centuries and continues to do so.



Lipulekh Pass

And then, in 2020, it all stopped again. This time the cause was not war but pandemic. The trade route was closed rather suddenly after the outbreak of the Covid-19 pandemic in 2019, forcing Indian traders to return from the Taklakot mart in Tibet, leaving behind their woollen products. The disruption was immediate and deeply personal for the traders involved. Indian tribal traders from Dharchula alone left trading items worth Rs 15 lakh in Taklakot Mart of Tibet at the time of closure, stored in plywood covers, with no information on whether the stored goods were safe or in a state of decay. What followed was not a temporary interruption but a prolonged silence, made worse by geopolitical circumstances that had nothing to do with the pandemic. With the military stand-off along the Line of Actual Control in eastern Ladakh from April-May 2020 to October 2024 casting a shadow on the overall bilateral relations between India and China, the border trade could not be restarted even after the pandemic was over.

The traders of Dharchula waited, appealed, and waited again. Jeewan Singh Rongkali, president of the Bharat Tibetan Simant Vyapar Samiti of Dharchula, stated that 22 applications had been sent to the Government of India requesting it to take up with Chinese authorities the reopening of the trade route through Lipulekh Pass, but that no response had been received. Five years passed. The younger generation of Bhotia traders, watching their livelihoods constrict and their inherited knowledge of the trade routes grow irrelevant, began to drift toward other occupations. The villages that had tentatively revived after 1992 began to quiet again. The weight of this silence was not merely economic; it was cultural, a slow dimming of practices and identities that had survived a war, a pandemic, and thirty years of enforced closure only to find themselves threatened once more by the abstractions of great-power rivalry.

The turning point came from a direction that few had anticipated: the resolution of the Galwan standoff. As the two sides started making attempts to bring ties back on track after the end of the standoff in October 2024, External Affairs Minister S. Jaishankar and his Chinese counterpart Wang Yi decided to restart border trade through all three mountain passes. The meeting between Jaishankar and Wang Yi in New Delhi saw India and China agreeing to restart border trade through the three designated points: Lipulekh Pass in Uttarakhand, Shipki La in Himachal Pradesh, and Nathu La in Sikkim. Both sides also agreed to continue and further expand the scale of the Indian pilgrimage to Mount Kailash, Gang Rinpoche, and Lake Mansarovar from 2026. The diplomatic announcement that followed was welcomed in Pithoragarh district with a relief that years of waiting had made particularly acute. The historic cross-border trade between India and China through the Lipulekh Pass is set to resume this June.

The revival of the Kailash Mansarovar Yatra is proceeding in parallel, and on an expanding scale. The pilgrimage resumed on June 30, 2025, jointly organised by the Government of Uttarakhand and the Ministry of External Affairs, operated by the Kumaon Mandal Vikas Nigam, with the first group of pilgrims entering China via the Lipulekh Pass on July 10, 2025, and the final group returning to India on August 22, 2025. In 2025, 750 pilgrims were selected from 5,561 applications across five Lipulekh batches; the 2026 intake expands to roughly 1,000 selected pilgrims. The infrastructural improvement that makes this expansion possible is itself a significant development. Post-2020, the Border Roads Organisation completed the motorable road all the way to Lipulekh, eliminating the demanding multi-day trek that had defined this route for decades. Pilgrims who once had to walk for several gruelling days through high-altitude terrain can now travel a substantial portion of the route by road, transforming the accessibility of what had been an extraordinarily arduous journey.

The economic implications for the region are considerable. Local traders and residents of border areas such as Dharchula, Gunji, and nearby villages have welcomed the move. The reopening is expected to revive traditional trade involving goods like wool, salt, herbs, and local handicrafts, a vital source of livelihood for many communities in the region. Beyond direct trade, the reopening is likely to positively impact tourism in the Kumaon Himalayas. Increased movement and improved infrastructure will enhance accessibility to key destinations such as Adi Kailash and Om Parvat, attracting pilgrims and adventure travellers alike. Authorities have also emphasised improved road connectivity, streamlined permit processes, and enhanced safety measures as part of the reopening plan.

The geopolitical context, however, demands that we read this reopening with appropriate complexity. Nepal's objection to the use of Lipulekh is not new, and it has not been resolved. Nepal has staked a territorial claim over the pass, stating that it is part of Nepali territory. In 2020, India inaugurated a newly constructed road by the Border Roads Organisation connecting Dharchula to Lipulekh; in response, Nepal updated its political map and its constitution to include the disputed territory, a move India strongly rejected. In response to the 2025 India-China decision to restart border trade through Lipulekh, Nepal again objected, calling the area part of its territory. New Delhi rejected the objection from Kathmandu. On 3 May, the foreign ministry of Nepal issued a formal objection regarding the use of the Lipulekh Pass for the 2026 Kailash Mansarovar Yatra. The dispute over the Kalapani-Lipulekh-Limpiyadhura triangle involves competing historical claims that both sides marshal with conviction, and it is unlikely to yield to any quick resolution. Lipulekh is more than a strategic pass; it embodies the complex interplay of history, geography, and national aspirations in the Himalayas.

What the reopening of 2026 ultimately offers is a chance to think about borders differently, to see them not as lines of exclusion but as zones of encounter, to recover the idea that the Himalayas have historically been porous, that the people who live at altitude have always found ways across, that culture, faith, and trade do not recognise the neat cartographic divisions that modern states prefer.

(15)

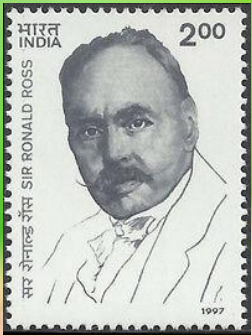
The Bhotia traders who waited five years for the route to reopen were not waiting for a diplomatic arrangement. They were waiting to resume something that had formed their sense of self, their relation to a landscape, their inherited knowledge of routes, seasons, and exchange. The pass, in this sense, is not merely infrastructure. It is memory, and memory, as the history of Lipulekh repeatedly demonstrates, has a remarkable capacity to outlast even the longest silences. The reopening of Lipulekh Pass in 2026 is not just a revival of a trade route; it is a step toward reconnecting history, culture, and livelihoods in one of India's most significant Himalayan corridors.

Dr. Kavinder Bhatt
Assistant Professor
Department of English



The Million-Murdering Death

HOW ROSS CRACKED MALARIA RIDDLE



(16)

For millennia, humanity's deadliest enemy was an invisible ghost. It was blamed on swamp gases, bad air, and night mists—hence its name, *mal'aria* ("bad air" in Italian). The disease decimated armies, collapsed empires, and killed billions.

The man who unmasked this killer was **Sir Ronald Ross**, an army surgeon who did not initially care for medicine. He preferred writing poetry, composing music, and solving complex mathematics. Yet, driven by an insatiable curiosity and relentless determination, he mapped the lifecycle of the malaria parasite. This monumental discovery earned him the **1902 Nobel Prize in Physiology or Medicine**, forever changing global health.

Early Life: The Reluctant Physician

Ronald Ross was born on **13 May 1857** in Almora, India (now Uttarakhand), nestled in the Himalayan foothills. He was the eldest of ten children born to Sir Campbell Claye Grant Ross, a fierce general in the British Indian Army.

At age eight, Ross was sent to England for his education. From a young age, his mind danced across disciplines. He was deeply drawn to nature, literature, and mathematics. He did not dream of stethoscopes or surgeries; he wanted to be an artist and a writer.

However, his father was unyielding. General Ross demanded that his eldest son enter the prestigious and lucrative Indian Medical Service (IMS). Out of duty and a desire to please his father, Ronald entered St Bartholomew's Hospital Medical College in London in 1875. He completed his medical studies with minimal enthusiasm, spending much of his time writing drama and poetry. In 1881, after a brief stint as a ship's surgeon, he officially entered the IMS.

Return to India: An Awakening of Curiosity

When Ross returned to India as an army doctor, he was stationed at various military outposts across Bangalore, Secunderabad, and Burma. The reality of colonial India hit him hard. He witnessed thousands of British soldiers and Indian civilians waste away from malaria and cholera.

His artistic detachment dissolved into scientific curiosity. Ross noticed that heavy sanitation work—draining puddles and cleaning barracks—reduced disease. He began publishing papers on sanitation, but his ideas were largely ignored by the medical establishment.

Frustrated by the lack of scientific rigor around him, Ross took a furlough to Britain in 1888 to study public health and bacteriology. It was during a subsequent leave in 1894 that a chance meeting altered the course of medical history.

The Meeting with Patrick Manson

In London, Ross met **Dr. Patrick Manson**, the "father of modern tropical medicine." Manson had previously demonstrated that filarial worms (which cause elephantiasis) were transmitted by mosquitoes.

Manson showed Ross something revolutionary under the microscope: the malaria parasite, *Plasmodium*. French physician Alphonse Laveran had discovered the parasite in human blood in 1880, but no one knew how it got there. Manson shared his hypothesis with Ross: **he believed mosquitoes sucked the parasite from infected human blood and somehow transmitted it to others.**

Manson challenged Ross to return to India and prove the theory. Ross, suddenly infused with a profound sense of purpose, accepted the challenge. A historic, three-year correspondence began between the mentor in London and the student in the scorching heat of India.

The Breakthrough: August 20, 1897

Upon returning to India in 1895, Ross faced nightmare working conditions. Stationed in Secunderabad, he worked in a small, oppressive laboratory with no air conditioning and failing equipment.

Ross needed to find out which specific mosquito carried the disease. He bred hundreds of mosquitoes from larvae, fed them on infected patients (paying them a few annas per session), and then dissected the insects atom by atom under a microscope. For two years, he examined thousands of gray (*Culex*) and brindled (*Aedes*) mosquitoes. He found absolutely nothing. His eyes ached, his health deteriorated, and his superiors grew impatient with his "eccentric" hobby.

Then came August 1897. Ross was given a few unusual mosquitoes with spotted wings—reared from a new batch of larvae. On **20 August 1897**, working through the blistering afternoon heat with a broken microscope eyepiece, Ross dissected the last of these spotted-wing mosquitoes (which we now know as the female *Anopheles* mosquito).

In his own words from his memoirs:

"The dissection was quite perfect... I saw a clear circular outline... and inside it, a cluster of small granules of black pigment."

He had found the malaria parasite growing inside the stomach wall of the mosquito. The chain of transmission was finally cracked. Overwhelmed with emotion, Ross penned a famous poem that night:

*This day Nedyh hath put
The thing into my hand.
By thy command. Chuka.
Praise be to thee O Lord.
With tears and toiling breath,
I find thy cunning seeds,
A million-murdering Death.*

Ross declared August 20 as **World Mosquito Day**, a date still observed globally to raise awareness about malaria.

Completing the Lifecycle (Kolkata)

Before Ross could prove how the parasite exited the mosquito to infect another host, the British military abruptly transferred him to a malaria-free region in Rajasthan. It was a crushing blow, engineered by superiors who viewed his research as a distraction.

Thankfully, Manson intervened, and Ross was reassigned to the Presidency General Hospital (now SSKM Hospital) in Calcutta (Kolkata) in 1898. Because human malaria was scarce in the city at the time, Ross shifted his focus to avian (bird) malaria, using infected sparrows and crows.

Here, he completed his masterpiece. He watched the malaria parasites mature in the mosquito's stomach, migrate through its body, and gather in immense numbers inside the **salivary glands**. When the mosquito bit a healthy bird, the parasites were injected along with the saliva. The cycle was complete.

Acclaim, Controversy, and the Nobel Prize

Ross returned to England in 1899 as a global hero. He joined the newly established Liverpool School of Tropical Medicine as a lecturer. However, his triumph was marred by a bitter, lifelong scientific feud. Italian physician **Giovanni Battista Grassi**, along with his colleagues, had been conducting independent research in Italy. Grassi successfully mapped the exact species of *Anopheles* that transmitted human malaria and claimed that Ross had only truly proven the cycle in birds.

The scientific community erupted into a toxic debate over priority. Ultimately, the Nobel Committee sided with Ross's foundational discoveries. In **1902, Ronald Ross was awarded the Nobel Prize in Physiology or Medicine**, making him the first British recipient and the first Nobel laureate born outside Europe. He was later knighted (KCB) in 1911.

The Mathematical Pioneer

While history remembers Ross as a doctor, his later years showcased his brilliance as a mathematician. He realized that treating individuals was not enough to eradicate a disease; one had to understand the mechanics of an epidemic.

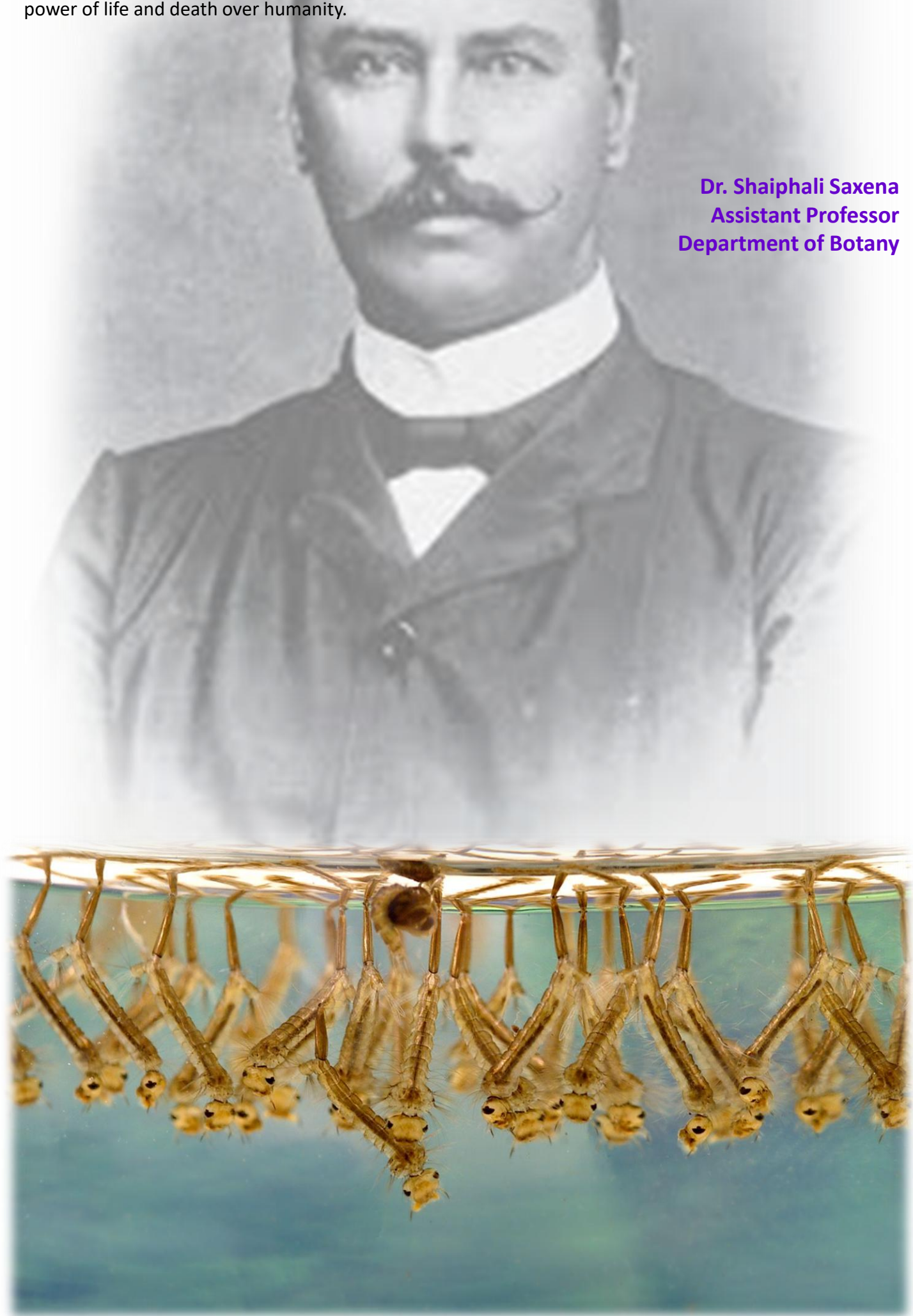
Ross invented the **Theory of Happenings** (1911), which laid the groundwork for modern mathematical epidemiology. He created equations to determine how many mosquitoes needed to be eliminated in a town to cause a malaria outbreak to collapse. This concept of a "transmission threshold" directly inspired the modern epidemiologic concept of **herd immunity** (R_0).

Later Years and Ultimate Legacy

Sir Ronald Ross spent his final decades directing the Ross Institute and Hospital for Tropical Diseases in London, which was founded in his honour. He travelled the world—from Panama and Greece to Mauritius—advising governments on how to drain swamps, clear brush, and use larvicides to destroy mosquito populations. His methods allowed William Gorgas to eliminate yellow fever and malaria during the construction of the Panama Canal, saving thousands of lives. Despite his fame, Ross died relatively poor on **16 September 1932** after a long illness. He was buried at Putney Vale Cemetery in London.

Today, Sir Ronald Ross is remembered as a true polymath. He published extensive poetry, composed music, wrote five novels, and solved differential equations. Yet his greatest gift to the world was an act of raw, stubborn persistence in a tiny, stifling lab in India—proving that a tiny insect held the power of life and death over humanity.

Dr. Shaiphali Saxena
Assistant Professor
Department of Botany



A SANCTUARY OF PROSE

The Literary Universe of Ruskin Bond



For over seven decades, **Ruskin Bond** has occupied a unique, irreplaceable space in Indian literature. While contemporary writers frequently chase complex global political narratives, Bond has spent his life doing the exact opposite: finding the extraordinary within the ordinary. As an author of British descent who proudly chose India as his permanent homeland, his life and work form a beautiful bridge between cultures. Bound together by a deep, unwavering love for nature and human vulnerability, he remains India's most beloved resident storyteller.

Early Life: The Roots of a Solitary Observer

Ruskin Bond was born on **19 May 1934** in the quiet hill town of Kasauli, Himachal Pradesh. His parents, Aubrey Alexander Bond and Edith Clarke, were of British descent. His early childhood was defined by geographical displacement and profound personal upheaval, moving between Jamnagar, Dehradun, and New Delhi.

- **The Loss of an Anchor:** When Bond was only four years old, his parents separated. This early fracture left him structurally isolated. He found brief solace in the deep companionship of his father, an officer in the Royal Air Force, who nurtured the young boy's passion for reading, stamp collecting, and nature.

Tragically, this anchor was severed when his father died suddenly of malaria in 1944, when Ruskin was only ten years old. Sent to live with his mother and stepfather in Dehradun, Bond navigated an intense emotional loneliness. He took refuge in the wild, overgrown gardens of Dehra and the grand, dusty libraries of his eccentric relatives.

- **The Bishop Cotton Years and the United Kingdom:** Bond was sent to **Bishop Cotton School** in Shimla, where his literary inclinations emerged. He won numerous school writing competitions, including the Irwin Cup and Hailey Literature Prize. Upon graduating in 1950, his mother sent him to the United Kingdom to live with his aunt in Jersey, seeking stable career prospects.

The four years spent in England did not ground him; instead, they cemented a fierce certainty: his identity was inextricably tied to the Indian soil.

Literary Debut and the Birth of Rusty

While working a mundane clerk job in London, a profoundly homesick 17-year-old Bond wrote his debut novel, ***The Room on the Roof* (1956)**. The novel introduces **Rusty**, a semi-autobiographical avatar. The book captured the raw, agonizing beauty of adolescence, teenage loneliness, and the desperate search for belonging. The literary community took immediate notice, awarding him the **John Llewellyn Rhys Prize** in 1957. Bond used the prize money to book his passage back to India, returning with a singular, radical ambition: to live entirely as a freelance writer.

Settling in Landour: The Architecture of a Quiet Life

After returning, Bond worked briefly in journalism and advertising across Delhi and Dehradun, but the frantic pace of post-independence urban expansion stifled his creativity. In 1963, he made a defining lifestyle choice, moving up to the hills and settling in Mussoorie.

In the early 1980s, he moved into **Ivy Cottage** in Landour, a quiet military cantonment perched just above Mussoorie. Living with his adopted family—the descendants of his long-time helper, Prem Singh—Bond established a tranquil, disciplined writing routine. From his small window overlooking the Pari Tibba (Fairy Hill) and the Doon Valley, he observed the changing seasons and the lives of the local hill folk, spinning them into timeless narratives.

Literary Style, Philosophy, and Major Themes

Bond's writing style is celebrated for its **lucidity, warmth, and deceptive simplicity**. He deliberately shuns heavy jargon, complex experimental structures, and aggressive political polemics. Instead, his prose flows naturally.

- **The Natural World:** Nature is never a mere backdrop in Bond's stories. He writes with profound intimacy about wild cherry trees, heavy monsoon rains, whistling thrushes, and the creeping winter mist.
- **The Beauty of the Mundane:** Bond is a master of the vignette. He finds profound beauty in everyday encounters—a brief chat with a vendor, a glance shared with a stranger on a railway platform, or the eccentricities of an old aunt.
- **Compassion for the Marginalised:** His characters are rarely wealthy or powerful. They are ordinary individuals whose lives are treated with dignity and deep empathy.
- **Nostalgia and Belonging:** Much of his work is look-back literature, bathed in a gentle twilight of nostalgia for a simpler, slower, and greener India that is rapidly vanishing due to urbanization.

Major Masterpieces and Anthologies

Over a career spanning more than seventy years, Bond has authored over **500 short stories, essays, and novellas**, alongside dozens of books for children.

Title	Year	Genre	Core Essence
The Room on the Roof	1956	Novel	A coming-of-age classic about identity, friendship, and adolescent rebellion.
Our Trees Still Grow in Dehra	1991	Short stories	A nostalgic collection exploring his deep emotional ties to the places and people of his youth.
The Blue Umbrella	1974	Novella	A simple allegory on human greed, kindness, and material attachment centering on a young girl named Binya.
The Night Train at Deoli	1988	Short stories	A collection featuring his most famous romantic short story about a fleeting, unforgettable encounter at a remote station.
A Flight of Pigeons	1970	Historical novella	Set during the Indian Uprising of 1857, it follows a British family seeking refuge with a Pathan family.

Modern Monograph: Ongoing Literary Vitality

Even well into his nineties, Bond's pen remains remarkably active. He continues his lifelong aversion to typewriters and computers, composing every single manuscript by hand using a fountain pen or a simple ballpoint.

His publishers continue to mark his birthday with major nationwide literary rollouts. For his 92nd birthday celebrations on **19 May 2026**, his long-time publisher HarperCollins India organized a simultaneous cake-cutting ceremony across **92 bookstores nationwide**.

The celebration coincided with the launch of his latest literary releases:

- **How to Laugh (2026):** A lighthearted philosophical text released by HarperCollins India that encourages readers of all ages to embrace humor and learn to laugh at life's everyday absurdities.
- **All-Time Favourite Friendship Stories (2026):** A curated collection launched during his birthday celebrations in Dehradun, exploring the timeless bonds of companionship across human and animal worlds.

- **Life's Magic Moments (2025):** A deeply personal biographical hardback drawing from nine decades of wisdom, focusing on the sanctity of human dreams and the generosity of our planet.

To permanently preserve his immense educational and cultural impact, institutional honours have also expanded, highlighted by the opening of the **Ruskin Bond International School** in Vadodara, which focuses its pedagogy entirely on nature-centric learning and emotional development. Furthermore, May 2026 marked the debut of the **Inaugural Ruskin Bond Festival** in Lekhan Gaon, Dehradun, a dedicated literary event celebrating his storytelling legacy across music, film, and heritage.

Awards, Critical Legacy, and Cinematic Influence

Recognizing his immense contribution to shaping the reading habits of generations, India has showered him with its highest literary and civilian honours:

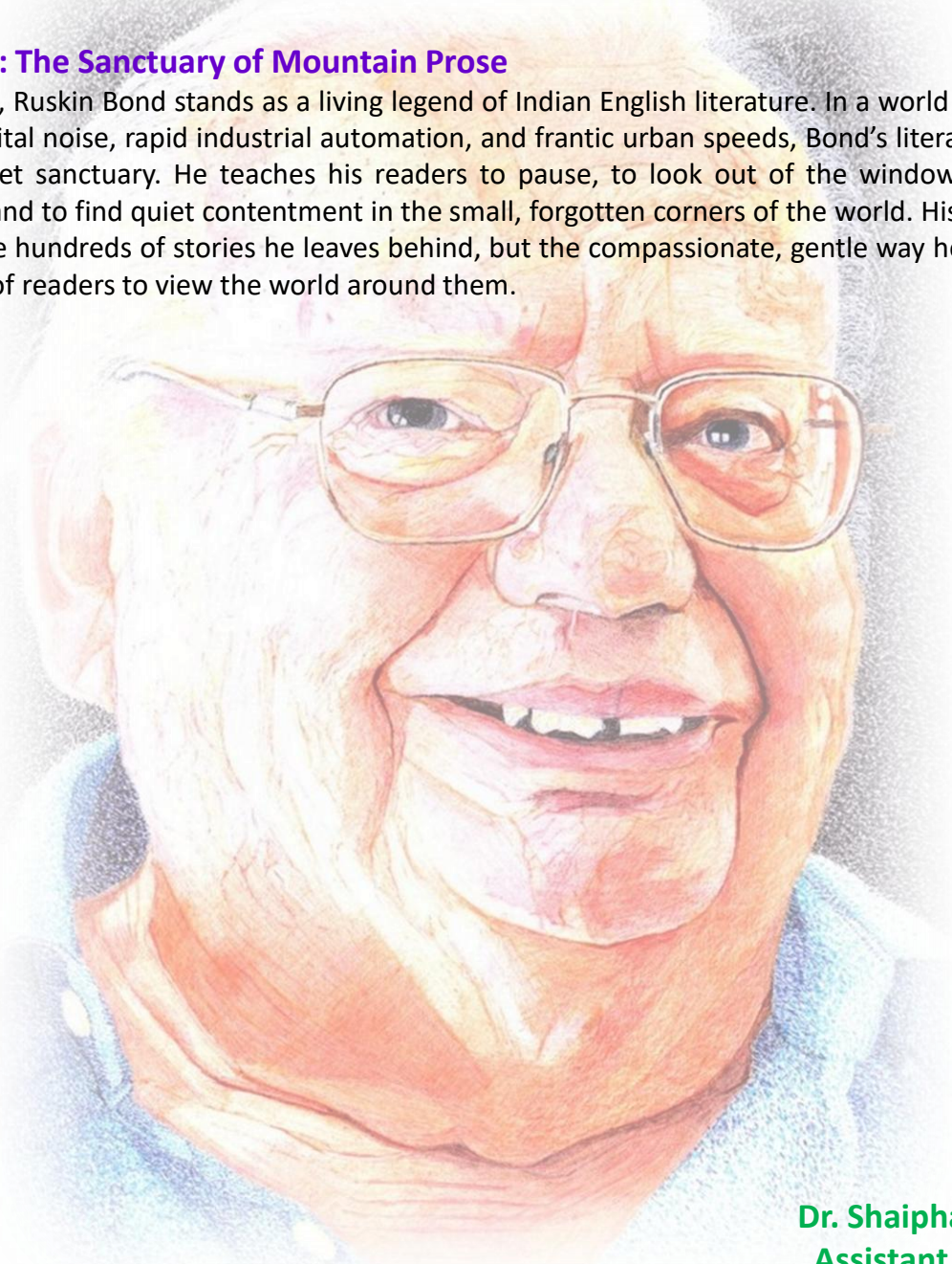
- **1992: Sahitya Akademi Award** for *Our Trees Still Grow in Dehra*.
- **1999: Padma Shri** for his monumental contributions to children's literature.
- **2014: Padma Bhushan**, India's third-highest civilian honour.
- **2021: Sahitya Akademi Fellowship**, the highest honour conferred by India's national academy of letters.
- **2024:** Conferred the prestigious **Ramnath Goenka Sahitya Samman** for Lifetime Achievement.

Cinematic Transformations

Bond's highly visual, sensory storytelling style has long attracted major Indian filmmakers. Pioneer arthouse director Shyam Benegal adapted *A Flight of Pigeons* into the historical drama film **Junoon (1979)**. Modern auteur Vishal Bhardwaj adapted *The Blue Umbrella* into a **National Award-winning children's film** in 2005, and later transformed his short story *Susanna's Seven Husbands* into the dark thriller **7 Khoon Maaf (2011)**, featuring a memorable cameo by Bond himself. On public television, Doordarshan's long-running series **Ek Tha Rusty** successfully brought his beloved teenage protagonist to life for millions of households across multiple seasons.

Conclusion: The Sanctuary of Mountain Prose

Today, Ruskin Bond stands as a living legend of Indian English literature. In a world increasingly driven by digital noise, rapid industrial automation, and frantic urban speeds, Bond's literature acts as a gentle, quiet sanctuary. He teaches his readers to pause, to look out of the window, to plant a cherry tree, and to find quiet contentment in the small, forgotten corners of the world. His true legacy is not just the hundreds of stories he leaves behind, but the compassionate, gentle way he has taught generations of readers to view the world around them.



Dr. Shaiphali Saxena
Assistant Professor
Department of Botany

समसामयिकी



मई अंक

समसामयिकी

- भारत में F1 कार्यक्रम का ब्रांड एम्बेसडर किसे नियुक्त किया गया है? **फेलिक्स ऑगर**
- 'इंडियन स्किमर' पक्षी के संरक्षण हेतु व्हिटली पुरस्कार 2026 किसे मिला? **परवीन शेख**
- भारत का पहला एकीकृत बासमती और जैविक प्रशिक्षण केंद्र कहाँ स्थापित किया गया? **उत्तर प्रदेश**
- पंचायत उन्नति सूचकांक 2.0 में किस राज्य को पहला स्थान मिला? **त्रिपुरा**
- IBSF वर्ल्ड बिलियर्ड्स चैम्पियनशिप 2026 का खिताब किसने जीता? **सौरव कोठारी**
- 'ई-श्रम साथी ऐप' किस राज्य में लॉन्च किया गया? **छत्तीसगढ़**
- BWF परिषद का अध्यक्ष किस भारतीय को नियुक्त किया गया? **पी.वी. सिंधु**
- हाल ही में 657 चोरी हुई प्राचीन वस्तुएं भारत को किस देश ने लौटाई? **संयुक्त राज्य अमेरिका**
- कैलाश मानसरोवर यात्रा किन दो दरों के माध्यम से फिर शुरू की जा रही है? **लिपुलेख और राथू ला**
- भारत का पहला 'ग्रीन मेथेनॉल प्लांट' कहाँ स्थापित किया जाएगा? **दीनदयाल पोर्ट अथॉरिटी, कांडला**
- 'आरोग्य मैत्री' पोर्टेबल हेल्थकेयर इंप्रास्ट्रक्चर भारत ने किस देश में तैनात किया? **जमैका**
- भारत के तीसरे चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (CDS) के रूप में किसे नियुक्त किया गया है? **एन एस राजा सुब्रमणि**
- चर्चित 'ट्युल्हर्सिहान मिसाइल' किस देश ने विकसित की है? **तुर्किये**
- IIT मद्रास ने डीप-टेक स्टार्टअप्स को बढ़ावा देने हेतु अपना पहला सेंटर किस देश में लॉन्च किया? **अमेरिका**
- 'यूनिवर्सिटी इनोवेटर अवॉर्ड' से किस भारतीय युवा वैज्ञानिक को सम्मानित किया गया? **डॉ. शेहर सुमन**
- पश्चिम बंगाल का नया मुख्य सचिव किसे नियुक्त किया गया है? **सुबेंदु अधिकारी**
- 'दुबई प्रतिष्ठा पुरस्कार' से किस भारतीय को सम्मानित किया गया? **दीपक भाटिया**
- दुनिया की पहली स्मार्ट दीप निगरानी प्रणाली किस देश ने शुरू की? **इक्वाडोर**
- UNESCO ने 'Ru-Soam' इंजीनियरिंग तकनीकों को डॉक्यूमेंट करने हेतु किस राज्य सरकार से साझेदारी की? **सिक्किम**
- तमिलनाडु का 13वां मुख्यमंत्री किसे नियुक्त किया गया है? **सी. जोसेफ विजय**
- भारत का UPI प्लेटफॉर्म अपनाने वाला पहला कैरेबियाई देश कौन बना? **त्रिनिदाद और टोबैगो**
- एशियाई भारोत्तोलन चैंपियनशिप 2026 का आयोजन किस देश में हुआ? **भारत**
- प्रतिष्ठित मीटियोरोलॉजिकल सोसायटी की फेलो चुनी जाने वाली पहली भारतीय महिला कौन बनीं? **कुलजीत कौर मारहास**
- MIRV सिस्टम वाली अग्नि मिसाइल का सफल परीक्षण किस राज्य में हुआ? **ओडिशा**
- शतरंज इतिहास में आधिकारिक रूप से दूसरे सबसे कम उम्र के ग्रैंडमास्टर कौन बने? **फॉस्टिनो ओरो**
- वाहनों पर धर्म आधारित पहचान चिह्नों के प्रदर्शन पर किस राज्य ने प्रतिबंध लगाया? **नागालैंड**
- पश्चिमी नौसेना कमान के नए फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ कौन बने? **संजय वात्स्यायन**
- भारत का पहला 'लो एमिशन ज़ोन' (LEZ) किस शहर में बनाया जाएगा? **पुणे**
- लॉरा वज़ीनिया को किस देश की दूसरी महिला राष्ट्रपति नियुक्त किया गया है? **कोस्टा रिका**
- असम का मुख्यमंत्री निम्न में से किसे नियुक्त किया गया है? **हिमंता बिस्वा सरमा**

- केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने किसके साथ मिलकर 'सेहत मिशन' शुरू किया? **शिवराज सिंह चौहान**
- कार्बन सोखने वाला भारत का पहला शैवाल वृक्ष कहाँ लॉन्च किया गया? **भोपाल**
- पीटर मेग्यार को किस देश का नया प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया है? **हंगरी**
- चर्चा में रहा 'गावी' किस देश का पहला रोबोट भिक्षु है? **दक्षिण कोरिया**
- एडीटी प्लेयर्स चैंपियनशिप में पहला खिताब जीतने वाले भारतीय गोल्फर कौन बने? **पुरखराज सिंह गिल**
- DRDO ने किस राज्य में UPLGM-V3 नामक स्वदेशी ड्रोन-आधारित मिसाइल प्रणाली का सफल परीक्षण किया? **आंध्र प्रदेश**
- NADA ने रेलवे के जशेर पटेल पर कितने वर्ष का प्रतिबंध लगाया? **तीन वर्ष**
- शराब में मौजूद अल्कोहल की मात्रा के आधार पर टैक्स लगाने वाला भारत का पहला राज्य कौन बना? **कर्नाटक**
- "खेत बचाओ अभियान" की घोषणा किसने की? **शिवराज सिंह चौहान**
- भारत की पहली AI और डिजिटल-संचालित बैंक शाखा कहाँ शुरू की गई? **असम**
- ई-स्पोर्ट्स विश्व कप 2026 में शामिल होने वाले पहले भारतीय ग्रैंडमास्टर कौन बने? **अरविंद चिदंबरम**
- हाल ही में भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार कौन बना? **बांग्लादेश**
- BRICS बैठक में भारत ने किस सुधार की मांग दोहराई? **UN Reform and UNSC Expansion**
- Physical Disability Cricket Championship 2026 के फाइनल में कौन-सी टीम पहुँची? **मुंबई और उत्तर प्रदेश**
- Chandrayaan-3 को कौन-सा पुरस्कार मिला? **AIAA Goddard Astronautics Award**
- किस देश ने भारत के Shukrayaan Mission में भागीदारी की घोषणा की? **स्वीडन**
- हाल ही में अग्नि-1 नामक कम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण किस राज्य से किया गया? **ओडिशा**
- डॉ. अजय कुमार को किस देश में भारत का उच्चायुक्त नियुक्त किया गया है? **युगांडा**
- फसलों के लिए दुनिया का पहला AI आधारित जीन एडिटर किस देश के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है? **भारत**
- उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन द्वारा लॉन्च की गई "द लाइब्रेरी मैन ऑफ इंडिया" पुस्तक किसने लिखी है? **पी. पी. सरयन**
- आधिकारिक रूप से अरबपति बनने वाले दुनिया के दूसरे फुटबॉलर कौन बने हैं? **लियोनेल मेसी**
- संसद रत्न पुरस्कार 2026 के लिए कितने सांसद चुने गए हैं? **12**
- एन राजम को हाल ही में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया है। वे किस वाद्ययंत्र से संबंधित हैं? **वायलिन**
- भारत के सबसे तेज धावक कौन बने हैं? **गुरिंदरवीर सिंह**
- "Better Never Stops" नामक पुस्तक किसने लिखी है? **श्याम श्रीनिवासन**
- राज्यसभा की याचिका समिति का अध्यक्ष किसे नियुक्त किया गया है? **राघव चड्ढा**
- WHO ने हाल ही में किस बीमारी के प्रकोप के कारण अंतर्राष्ट्रीय चिंता का सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित किया है? **मंकीपॉक्स**
- कान्स फिल्म फेस्टिवल 2026 में किस फिल्म को 'कैमरा डी'ऑर' पुरस्कार मिला है? **बेन इमाना**

- किस देश के डॉक्टरों ने 3000 किलोमीटर दूर से हैदराबाद में सफल रिमोट रोबोटिक सर्जरी की है? **चीन**
- किस देश ने हाल ही में परमाणु सक्षम हाइपरसोनिक 'ओरेशनिक (Oreshnik)' मिसाइल लॉन्च की है? **रूस**
- किस राज्य सरकार ने 'वंदे गंगा जल संरक्षण - जन अभियान 2026' शुरू किया है? **मध्य प्रदेश**





मई माह में जन्मी
उत्तराखण्ड की प्रमुख
प्रेरणादायी हस्तियाँ

मई माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रेरणादायी हस्तियाँ

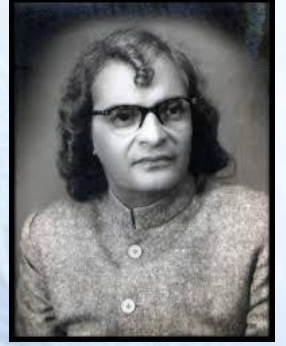


(1.) सर रोनाल्ड रॉस (13 मई, 1857- अल्मोड़ा)

अल्मोड़ा (तब ब्रिटिश भारत) में जन्मे सर रोनाल्ड रॉस एक प्रसिद्ध ब्रिटिश चिकित्सक थे। उन्होंने भारत के सिकंदराबाद में मलेरिया पर रिसर्च करते हुए यह ऐतिहासिक खोज की कि मलेरिया रोग का संचरण मच्छरों (Anopheles) के काटने से होता है। उनकी इस क्रांतिकारी खोज ने दुनिया भर में करोड़ों लोगों की जान बचाई। इस अभूतपूर्व कार्य के लिए उन्हें साल 1902 में चिकित्सा के क्षेत्र में **नोबेल पुरस्कार** से सम्मानित किया गया, जिससे वह इस पुरस्कार को पाने वाले पहले ब्रिटिश नागरिक बने।

(2.) सुमित्रानंदन पंत (20 मई, 1900- कौसानी, बागेश्वर)

पंत जी हिंदी साहित्य के 'छायावादी युग' के चार प्रमुख स्तंभों (जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा और सुमित्रानंदन पंत) में से एक थे। उत्तराखंड की प्राकृतिक सुंदरता के बीच पले-बढ़े होने के कारण उनकी कविताओं में प्रकृति का अद्भुत वर्णन मिलता है, इसलिए उन्हें "प्रकृति का सुकुमार कवि" कहा जाता है। उनकी महान रचना *चिदंबरा* के लिए उन्हें साल 1968 में साहित्य के सर्वोच्च सम्मान **ज्ञानपीठ पुरस्कार** से नवाजा गया। वह यह पुरस्कार पाने वाले हिंदी भाषा के पहले लेखक थे। इसके अलावा उन्हें *कला और बूढ़ा चाँद* के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार और भारत सरकार द्वारा **पद्म भूषण** भी दिया गया था।



(3.) रस्किन बॉन्ड (19 मई, 1934- कसौली)

रस्किन बॉन्ड ने अपना पहला उपन्यास *द रूम ऑन द रूफ* मात्र 17 साल की उम्र में लिखा था, जिसके लिए उन्हें '**जॉन लेवेलिन राइस पुरस्कार**' मिला। उनकी कई कहानियों पर बॉलीवुड फिल्में भी बनी हैं, जैसे *जुनून* (उनकी किताब 'ए फ्लाइट ऑफ पिजन्स' पर) और *7 खून माफ* (उनकी कहानी 'सुसन्नास सेवन हसबैंड्स' पर)। हालांकि उनका जन्म हिमाचल प्रदेश के कसौली में हुआ था, लेकिन उन्होंने अपना पूरा जीवन उत्तराखंड की वादियों में बिताया है। वह पिछले कई दशकों से मसूरी के पास लैंडौर में रह रहे हैं। भारत सरकार ने उन्हें 1999 में **पद्म श्री** और 2014 में **पद्म भूषण** से सम्मानित किया।



(4.) नीलेश मिश्रा (5 मई, 1973- नैनीताल)

नीलेश एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं जो पत्रकार, लेखक, पटकथा लेखक और गीतकार के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने *दिमाग की बत्ती* जैसी किताबें लिखी हैं और *एक था टाइगर* व *टाइगर जिंदा है* जैसी फिल्मों के लिए गाने और स्क्रिप्ट लिखी हैं। बिग एफएम पर उनका शो *यादों का इंडियन बॉक्स* भारत के सबसे सफल रेडियो शो में से एक रहा है। वह ग्रामीण भारत की आवाज उठाने वाले प्रसिद्ध मीडिया प्लेटफॉर्म *गाँव कनेक्शन* के संस्थापक भी हैं।



(5.) मीना राणा (24 मई, 1975- दिल्ली)

दिल्ली में जन्मी मीना राणा का पैतृक जुड़ाव उत्तराखंड से है और वे पिछले तीन दशकों से पहाड़ों की सबसे लोकप्रिय आवाज बनी हुई हैं। उन्होंने अपने करियर में 500 से अधिक गढ़वाली, कुमाऊँनी और जौनसारी लोक गीतों को अपनी आवाज दी है। उनके प्रसिद्ध गीतों में *घूँघूती*, *नौछमी नारायण*, *समोला म्यारा सुवा* शामिल हैं। उन्हें उत्तराखंड की संस्कृति और संगीत को जीवित रखने के लिए कई बार 'उत्तराखंड रत्न' और सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका के पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिसके कारण उन्हें प्यार से उत्तराखंड की "**लता मंगेशकर**" कहा जाता है।



(6.) वीर दास (31 मई, 1979- देहरादून)

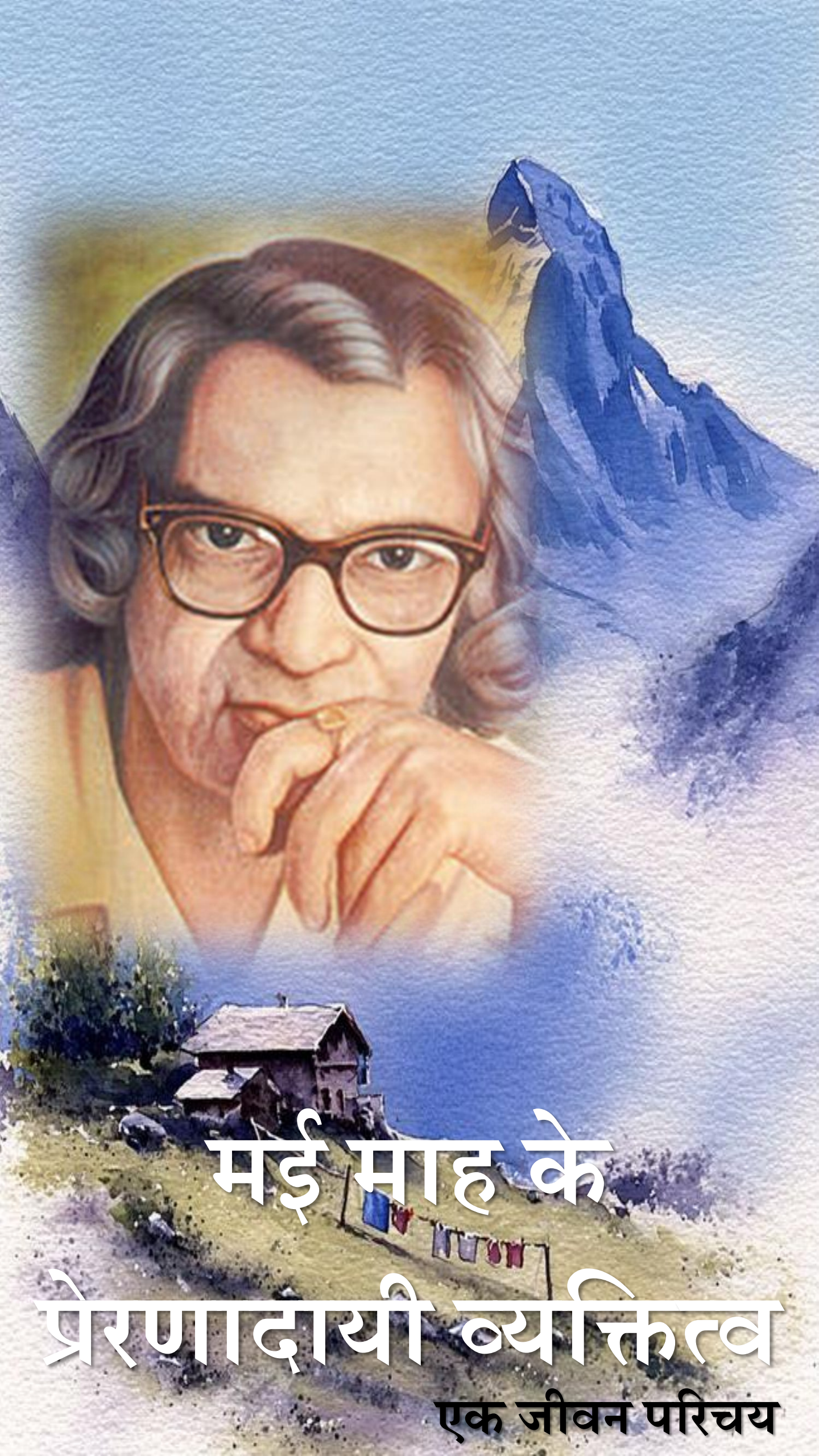
वीर दास का जन्म देहरादून में हुआ था और उनकी शुरुआती शिक्षा भी यहीं हुई। वह आज भारत के सबसे सफल अंतरराष्ट्रीय स्टैंड-अप कॉमेडियन हैं। उन्होंने *दिल्ली बेली*, *गो गोवा गॉन* और *बदमाश कंपनी* जैसी कई प्रसिद्ध बॉलीवुड फिल्मों में मुख्य भूमिकाएँ निभाई हैं। वीर दास भारत के पहले ऐसे हास्य कलाकार हैं जिन्होंने अमेरिकी टेलीविजन और नेटफ्लिक्स पर बड़े शो होस्ट किए हैं। साल 2023 में उन्होंने अपने नेटफ्लिक्स स्टैंड-अप स्पेशल *वीर दास: लैंडिंग* के लिए दुनिया का सबसे प्रतिष्ठित **इंटरनेशनल एमी अवॉर्ड** जीतकर भारतीय कॉमेडी को वैश्विक मंच पर स्थापित किया।

(7.) शिवांगी जोशी (18 मई, 1998 — देहरादून)

शिवांगी भारतीय टीवी जगत की सबसे महंगी और टॉप अभिनेत्रियों में गिनी जाती हैं। उन्होंने साल 2013 में *खेलती है जिंदगी आंख मिचोली* से डेब्यू किया था, लेकिन स्टार प्लस के शो *ये रिश्ता क्या कहलाता है* में 'नायरा सिंघानिया' के रोल ने उन्हें वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बना दिया। इसके बाद उन्होंने *बालिका वधू 2* में आनंदी और *बरसातें - मौसम प्यार का* में अराधना की मुख्य भूमिकाएँ निभाईं। उन्हें उनके बेहतरीन अभिनय के लिए कई 'गोल्ड अवॉर्ड्स' और 'एशियन व्यूअर्स टेलीविजन अवॉर्ड्स' मिल चुके हैं।

**(8.) चेतना पांडे (3 मई, 1989 — देहरादून)**

चेतना एक भारतीय अभिनेत्री और मॉडल हैं जिन्होंने अपने करियर की शुरुआत तमिल फिल्म 'नेयुम नानुम' से की थी। उन्हें बड़ी पहचान साल 2015 की बॉलीवुड फिल्म *दिलवाले* में जेनी के किरदार से मिली। वह *एमटीवी फना*, *वेबेड* और *एमटीवी ऐस ऑफ स्पेस* जैसे लोकप्रिय शोज़ का हिस्सा रही हैं। साल 2022 में उन्होंने स्टंट आधारित रियलिटी शो *खतरों के खिलाड़ी 12* में भाग लेकर काफी सुर्खियां बटोरीं।

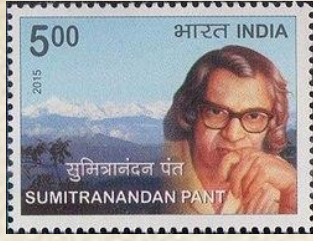


मई माह के

प्रेरणादायी व्यक्तित्व

एक जीवन परिचय

छायावाद के अमर पुरुषोद्धार



महाकवि सुमित्रानंदन पंत



हिंदी साहित्य के गगनमंडल में **सुमित्रानंदन पंत** एक ऐसे दैदीप्यमान नक्षत्र हैं, जिन्होंने कविता को केवल शब्दों का जाल नहीं बल्कि प्रकृति की धड़कन, सौंदर्य की सुकुमारता और दर्शन की गहराई दी। वे छायावाद के उस 'चतुष्टय' (जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा और सुमित्रानंदन पंत) के प्रमुख स्तंभ हैं, जिन्होंने खड़ी बोली हिंदी को ब्रजभाषा जैसी ही सरसता और माधुर्य प्रदान किया।

प्रकृति के अनन्य उपासक होने के कारण उन्हें 'प्रकृति का सुकुमार कवि' और 'शब्द-शिल्पी' जैसी उपाधियों से विभूषित किया गया।

1. जन्म, पृष्ठभूमि और प्रारंभिक जीवन का संघर्ष

सुरम्य जन्मभूमि और प्राकृतिक परिवेश

सुमित्रानंदन पंत का जन्म **20 मई 1900** को तत्कालीन संयुक्त प्रांत (अब उत्तराखंड) के अल्मोड़ा जिले में स्थित **कौसानी** नामक एक अत्यंत खूबसूरत पहाड़ी गाँव में हुआ था। कौसानी को अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण 'भारत का स्विट्जरलैंड' भी कहा जाता है। बर्फ से ढकी हिमालय की चोटियाँ, चीड़ और देवदार के ऊँचे वृक्ष, और बहते झरनों के इसी परिवेश ने पंत जी के कोमल मन को बचपन में ही काव्य-संस्कार दे दिए थे। उनके पिता का नाम **पंडित गंगादत्त पंत** था, जो कौसानी चाय बगान के एक प्रतिष्ठित मैनेजर थे।

मातृ-वियोग और नाम परिवर्तन

नियति ने पंत जी को जन्म के साथ ही एक गहरा आघात दिया। उनके जन्म के मात्र छह घंटे बाद ही उनकी माता **सरस्वती देवी** का आकस्मिक निधन हो गया। माँ के आँचल की छाया न मिलने के कारण उनका लालन-पालन उनकी स्नेहमयी दादी और बुआ ने किया।

उनका मूल नाम '**गोसाईं दत्त**' रखा गया था। जब वे थोड़े बड़े हुए और स्कूल जाने लगे, तो उन्हें यह नाम अत्यंत पुराना और अरुचिकर लगा। रामायण के महान पात्र लक्ष्मण (सुमित्रा के पुत्र) के चरित्र से प्रभावित होकर उन्होंने स्वयं अपना नाम बदलकर '**सुमित्रानंदन पंत**' रख लिया, जो आगे चलकर साहित्य जगत का पर्याय बना।

2. शिक्षा, स्वाध्याय और राष्ट्रीय चेतना

प्रारंभिक एवं उच्च शिक्षा

पंत जी की प्राथमिक शिक्षा कौसानी के ही एक स्थानीय वर्नाक्यूलर स्कूल में हुई। इसके बाद उच्च शिक्षा के लिए उन्हें अल्मोड़ा के **गवर्नमेंट हाई स्कूल** में भेजा गया। यहाँ रहते हुए उन्होंने अपनी सुकोमल और आकर्षक वेशभूषा तथा लंबे घुँघराले बालों के कारण सबका ध्यान खींचा, जो उनके कवित्वपूर्ण व्यक्तित्व की पहचान बन गए।

वर्ष 1918 में वे अपने मँझले भाई के साथ **काशी (वाराणसी)** चले गए। वहाँ उन्होंने 'जयनारायण हाई स्कूल' से मैट्रिक (दशवीं) की परीक्षा उत्तीर्ण की। काशी के साहित्यिक वातावरण ने उनकी काव्य प्रतिभा को और प्रस्फुटित किया। इसके बाद वर्ष 1919 में वे **इलाहाबाद (प्रयागराज)** आ गए और वहाँ के प्रसिद्ध **म्योर सेंट्रल कॉलेज** में इंटरमीडिएट की पढ़ाई के लिए दाखिला लिया।

स्वतंत्रता आंदोलन में भागीदारी

जब पंत जी इलाहाबाद में अध्ययनरत थे, तभी देश में महात्मा गांधी के नेतृत्व में **असहयोग आंदोलन (1921)** की लहर चल रही थी। गांधीजी के एक आह्वान पर देश के हजारों युवाओं ने अंग्रेजी संस्थाओं का बहिष्कार कर दिया। देशप्रेम और राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत होकर पंत जी ने भी अपनी कॉलेज की पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी।

यद्यपि उन्होंने औपचारिक डिग्री प्राप्त नहीं की, लेकिन उन्होंने घर पर ही रहकर हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी और बांग्ला साहित्य का गहन स्वाध्याय किया। उन्होंने रवींद्रनाथ टैगोर, कीट्स, शेली और वर्ड्सवर्थ जैसे महान कवियों को आत्मसात किया।

3. पंत जी की काव्य-यात्रा के तीन वैचारिक चरण

पंत जी का काव्य जीवन निरंतर परिवर्तनशील रहा। वे किसी एक विचार पर ठहरने वाले कवि नहीं थे, बल्कि युग के साथ उनकी सोच बदलती रही। उनके काव्य विकास को मुख्य रूप से तीन चरणों में समझा जा सकता है:

प्रथम चरण: छायावादी काल (1916 - 1934): प्रकृति और सौंदर्य का काल

इस दौर में पंत जी पूरी तरह प्रकृति के सौंदर्य और रहस्यवाद में डूबे रहे। वे प्रकृति को केवल जड़ पेड़-पौधे नहीं, बल्कि एक सजीव सहचरी और माँ के रूप में देखते थे। उनकी पंक्तियाँ प्रकृति के प्रति उनके अनन्य प्रेम को दर्शाती हैं:

“छोड़ ड्रमों की मृदु छाया, तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले! तेरे बाल-जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन?”

- प्रमुख विशेषताएँ: वैयक्तिकता, सुकुमारता, कोमलकांत पदावली, देशप्रेम और अलौकिक सत्ता के प्रति जिज्ञासा।
- मुख्य कृतियाँ: उच्छ्वास, वीणा, ग्रंथि, पल्लव, और गुंजन।
- विशेष बिंदु: 'पल्लव' (1926) की भूमिका को छायावादी कविता का 'घोषणापत्र' कहा जाता है, जिसमें उन्होंने खड़ी बोली के स्वरूप और छंदों पर ऐतिहासिक विमर्श किया था।

द्वितीय चरण: प्रगतिवादी काल (1935 - 1945) — समाजवाद और यथार्थ का काल

समय के साथ पंत जी का ध्यान पहाड़ों के सौंदर्य से हटकर समाज के शोषित वर्ग, किसानों और मजदूरों की दयनीय स्थिति पर गया। वे कार्ल मार्क्स के समाजवादी विचारों और सिगमंड फ्रायड के मनोविज्ञान से गहरे प्रभावित हुए। वे 'कवि-लोक' से उतरकर 'भू-लोक' (धरती के यथार्थ) पर आ गए।

- प्रमुख विशेषताएँ: सामाजिक विषमता का विरोध, शोषितों के प्रति सहानुभूति, क्रांति का आह्वान और यथार्थवाद।
- मुख्य कृतियाँ: युगांत, युगवाणी, और ग्राम्या।
- प्रसिद्ध पंक्ति: “गा कोकिल, बरषा पावक कण, नष्ट भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन!”

तृतीय चरण: नव-मानवतावादी एवं अंतश्चेतनावादी काल (1946 से मृत्यु तक)- अरविंद दर्शन और अध्यात्म

वर्ष 1946 में पंत जी पुदुचेरी (पोंडिचेरी) गए, जहाँ उनकी मुलाकात महान दार्शनिक महर्षि अरविंद से हुई। श्री अरविंद के 'अतिमानस' और 'पूर्णयोग' के दर्शन ने पंत जी को भीतर तक झकझोर दिया। अब उनकी कविता मार्क्सवाद की भौतिकता से ऊपर उठकर मानव की आत्मिक उन्नति और वैश्विक मानवता की ओर मुड़ गई।

- प्रमुख विशेषताएँ: आध्यात्मिकता, अंतर्मन का विकास, विश्व-कल्याण की भावना और वैज्ञानिक चेतना तथा अध्यात्म का समन्वय।
- मुख्य कृतियाँ: स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, युगांतर, उत्तरा, लोकायतन, और चिदंबरा।

4. प्रमुख रचनाएँ और विधागत अवदान

पंत जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। कविता के अतिरिक्त उन्होंने गद्य की विभिन्न विधाओं पर भी अपनी सशक्त लेखनी चलाई:

विधा	प्रमुख कृतियाँ
छायावादी काव्य	वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, उच्छ्वास
प्रगतिवादी काव्य	युगांत, युगवाणी, ग्राम्या
अरविंद दर्शन प्रभावित काव्य	स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, लोकायतन, चिदंबरा, कला और बूढ़ा चाँद
महाकाव्य	लोकायतन (इसमें भारतीय जनजीवन के विकास का व्यापक चित्रण है)
काव्य-नाटक	ज्योत्स्ना, रजतशिखर, शिल्पी, सौवर्ण
उपन्यास	हार (1960)
कहानी संग्रह	पाँच कहानियाँ
आत्मकथा/संस्मरण	साठ वर्ष: एक रेखांकन

5. ऐतिहासिक सम्मान, पुरस्कार और राष्ट्र को योगदान

सुमित्रानंदन पंत हिंदी के उन विरले साहित्यकारों में से हैं जिन्हें अपने जीवनकाल में ही अपार लोकप्रियता, सम्मान और राज्याश्रय (आदर) प्राप्त हुआ:

- **प्रथम हिंदी ज्ञानपीठ पुरस्कार (1968):** पंत जी को उनके वृहद काव्य संकलन 'चिदंबरा' के लिए साहित्य के क्षेत्र में भारत के सर्वोच्च सम्मान 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' से नवाजा गया। वे यह पुरस्कार पाने वाले हिंदी भाषा के सर्वप्रथम कवि बने।
- **साहित्य अकादमी पुरस्कार (1960):** उनकी कालजयी और दार्शनिक रचना 'कला और बूढ़ा चाँद' के लिए उन्हें यह सम्मान मिला।
- **पद्म भूषण (1961):** भारत के राष्ट्रपति द्वारा उन्हें राष्ट्र के तीसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'पद्म भूषण' से अलंकृत किया गया।
- **सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार:** उनके महाकाव्य 'लोकायतन' के लिए उन्हें सोवियत संघ द्वारा इस अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- **'आकाशवाणी' का नामकरण:** प्रयागराज में रहते हुए पंत जी ऑल इंडिया रेडियो (AIR) के मुख्य परामर्शदाता (Chief Consultant) नियुक्त हुए थे। उन्हीं के विशेष सुझाव पर भारत सरकार ने 'ऑल इंडिया रेडियो' का नाम बदलकर 'आकाशवाणी' किया था, जो आज भी प्रचलित है।

6. जीवन का अंतिम पड़ाव और अमर विरासत

सुमित्रानंदन पंत आजीवन अविवाहित रहे। उन्होंने अपना पूरा जीवन केवल और केवल साहित्य और कला की साधना में व्यतीत किया। जीवन के उत्तरार्ध में वे प्रयागराज (इलाहाबाद) में ही बस गए थे। 28 दिसंबर 1977 को इस महान शब्द-शिल्पी और युग-द्रष्टा कवि का प्रयागराज में निधन (महाप्रयाण) हो गया।

सुमित्रानंदन पंत वीथिका (संग्रहालय)

उनके निधन के बाद, कौसानी (उत्तराखण्ड) स्थित उनके पैतृक घर को भारत सरकार द्वारा एक राष्ट्रीय संग्रहालय के रूप में संरक्षित किया गया, जिसे 'सुमित्रानंदन पंत वीथिका' कहा जाता है। यहाँ उनकी व्यक्तिगत वस्तुएँ, जैसे उनकी प्रिय चश्मा, पत्र, पांडुलिपियाँ, ज्ञानपीठ पुरस्कार का प्रशस्ति पत्र और उनकी लिखी अनमोल पुस्तकें आज भी सुरक्षित हैं। प्रत्येक वर्ष देश-विदेश से हजारों साहित्य प्रेमी इस स्थान पर आकर उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।



पंत जी की कविता केवल मनोरंजन का साधन नहीं थी, बल्कि वह मानव चेतना को सुंदर, सुसंस्कृत और संवेदनशील बनाने का एक माध्यम थी। खड़ी बोली को जो कोमलता और लचीलापन उन्होंने दिया, उसके लिए हिंदी साहित्य सदैव उनका ऋणी रहेगा।

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग



May

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

मई माह के
महत्वपूर्ण दिवस

मई माह के महत्वपूर्ण दिवस

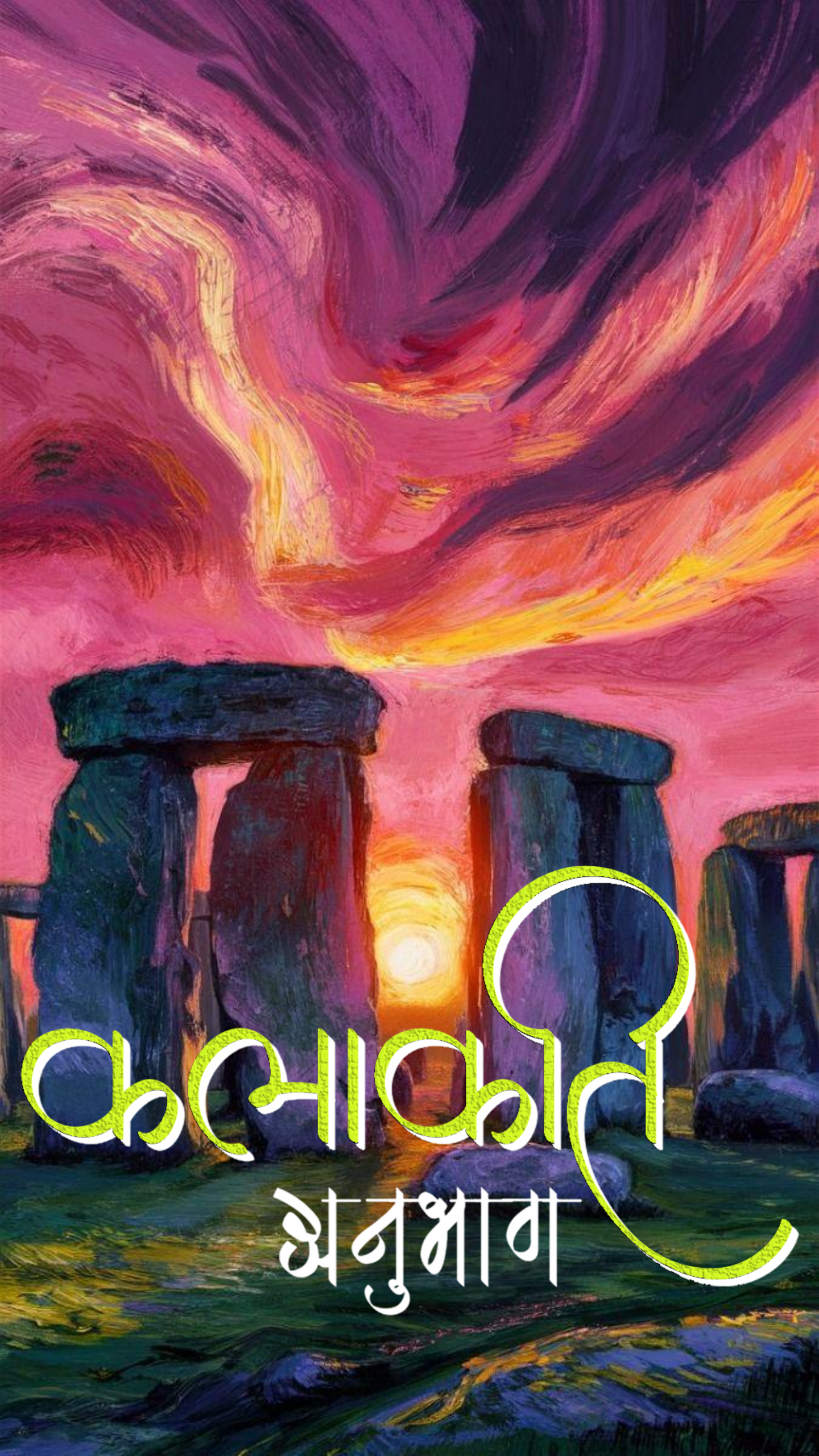
क्र० सं०	तिथि	दिवस का नाम	विवरण
1.	1 मई	बुद्ध जयन्ती या बुद्ध पूर्णिमा	ऐसा माना जाता है कि वैशाख महीने की पूर्णिमा को कपिलवस्तु के पास लुम्बिनी में गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था। उन्हें 'एशिया का ज्योतिपुंज' भी कहा जाता है। इस वर्ष बुद्ध जयन्ती या बुद्ध पूर्णिमा 1 मई को मनाई जा रही है।
		महाराष्ट्र दिवस	इसे मराठी में महाराष्ट्र दिवस के नाम से भी जाना जाता है। यह महाराष्ट्र राज्य का राजकीय अवकाश है। महाराष्ट्र राज्य का गठन 1 मई 1960 को बॉम्बे राज्य के विभाजन से हुआ था।
		गुजरात दिवस	यह गुजरात राज्य में राजकीय अवकाश है। गुजरात राज्य का गठन 1 मई 1960 को हुआ था।
2.	2 मई	विश्व टूना दिवस	यह दिवस 2 मई को मनाया जाता है और संयुक्त राष्ट्र (यूएन) द्वारा टूना मछली के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए स्थापित किया गया है।
3.	3 मई	प्रेस स्वतंत्रता दिवस	हर साल 3 मई को प्रेस स्वतंत्रता दिवस या विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है ताकि दुनिया भर में प्रेस की स्वतंत्रता का मूल्यांकन किया जा सके और उन पत्रकारों को श्रद्धांजलि दी जा सके जिन्होंने अपने पेशे के दौरान अपनी जान गंवाई है।
		विश्व हास्य दिवस (मई का पहला रविवार)	विश्व हास्य दिवस हर साल मई के पहले रविवार को मनाया जाता है। 1998 में, इसका पहला आयोजन मुंबई, भारत में हुआ था। इसका आयोजन विश्वव्यापी हास्य योग आंदोलन के संस्थापक डॉ. मदन कटारिया ने किया था।
4.	4 मई	कोयला खनिक दिवस	हर साल 4 मई को कोयला खनिक दिवस मनाया जाता है, ताकि कोयला खनिकों को सम्मानित किया जा सके। आपको बता दें कि कोयला खनन का काम जमीन से कोयला निकालने के लिए किया जाता है। कोयला खनन भारत के सबसे खतरनाक पेशों में से एक है। कोयला खनिक वे लोग हैं जो जानते हैं कि दिन भर काम करने के बाद शायद वे घर न लौट पाएं। फिर भी वे कोयला खदानों में जाते हैं और अपनी दैनिक मजदूरी कमाते हैं।
		अन्तर्राष्ट्रीय अग्निशामक दिवस	अन्तर्राष्ट्रीय अग्निशामक दिवस हर साल 4 मई को मनाया जाता है। इसकी स्थापना 4 जनवरी, 1999 को ऑस्ट्रेलिया में जंगल की आग में पांच अग्निशामकों की मृत्यु के बाद दुनिया भर में ईमेल के माध्यम से भेजे गए एक प्रस्ताव के बाद हुई थी। इसलिए, यह दिन अग्निशामकों द्वारा अपने समुदायों और पर्यावरण को यथासंभव सुरक्षित रखने के लिए किए गए बलिदानों को पहचानने और सम्मानित करने के लिए मनाया जाता है।

क्र० सं०	तिथि	दिवस का नाम	विवरण
5.	5 मई	विश्व अस्थमा दिवस (मई का पहला मंगलवार)	विश्व अस्थमा दिवस हर साल मई के पहले मंगलवार को मनाया जाता है ताकि दुनिया भर में अस्थमा के बारे में जागरूकता और देखभाल फैलाई जा सके। यह वार्षिक कार्यक्रम ग्लोबल इनिशिएटिव फॉर अस्थमा द्वारा आयोजित किया जाता है। अस्थमा ब्रोंकाइटिस की एक पुरानी सूजन है जिससे खांसी, सांस लेने में तकलीफ, सीने में जकड़न आदि होती है।
6.	6 मई	अन्तर्राष्ट्रीय नो डाइट दिवस	यह प्रतिवर्ष 6 मई को मनाया जाता है। यह शरीर की विभिन्न आकृतियों सहित, शरीर को स्वीकार करने का उत्सव है।
7.	7 मई	विश्व एथलेटिक्स दिवस	विश्व एथलेटिक्स दिवस 7 मई को मनाया जाता है ताकि स्कूलों और संस्थानों में युवाओं के बीच खेलों के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सके और एथलेटिक्स को प्राथमिक खेल के रूप में बढ़ावा दिया जा सके। साथ ही, एथलेटिक्स के क्षेत्र में नई प्रतिभाओं और युवाओं को प्रोत्साहित किया जा सके।
		रवींद्रनाथ टैगोर जयन्ती	प्रेगोरियन पंचांग के अनुसार, अन्य राज्यों में यह जयन्ती 7 मई को मनाई जाती है। उनका जन्म 7 मई 1861 को कोलकाता में हुआ था। पश्चिम बंगाल में यह जयन्ती बोइशाख माह की 25वीं तिथि को मनाई जाती है। वे भारत के शीर्ष कलाकारों, उपन्यासकारों, लेखकों, बंगाली कवियों, मानवतावादियों और दार्शनिकों में से एक थे। 1913 में उन्हें साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।
8.	8 मई	विश्व रेड क्रॉस दिवस	विश्व रेड क्रॉस दिवस हर साल 8 मई को रेड क्रॉस के संस्थापक की जयन्ती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। आपको बता दें कि रेड क्रॉस के संस्थापक हेनरी डुनेंट थे, जो अन्तर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस समिति (आईसीआरसी) के भी संस्थापक थे। उनका जन्म 1828 में जिनेवा में हुआ था। वे पहले नोबेल शांति पुरस्कार के प्राप्तकर्ता बने।
		विश्व थैलेसीमिया दिवस	विश्व थैलेसीमिया दिवस या अन्तर्राष्ट्रीय थैलेसीमिया दिवस हर साल 8 मई को थैलेसीमिया से पीड़ित सभी रोगियों और उनके माता-पिता के सम्मान में मनाया जाता है, जिन्होंने इस बीमारी के बावजूद जीवन की उम्मीद कभी नहीं छोड़ी। यह दिन उन लोगों को भी प्रोत्साहित करता है जो इस बीमारी के साथ जीने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।
9.	10 मई	विश्व ल्यूपस दिवस	हर साल 10 मई को, दुनिया भर में लोग विश्व ल्यूपस दिवस मनाते हैं। इसका उद्देश्य हमें इस तथ्य के प्रति अधिक जागरूक करना है कि देखने में असंबंधित लगने वाले लक्षण वास्तव में एक दीर्घकालिक, अपंग कर देने वाली ऑटोइम्यून बीमारी के संकेत हैं।
		मातृ दिवस (मई का दूसरा रविवार)	मातृ दिवस हर साल मई के दूसरे रविवार को मातृत्व के सम्मान में मनाया जाता है और दुनिया भर में इसे अलग-अलग रूपों में मनाया जाता है। मातृ दिवस की शुरुआत अन्ना जार्विस ने की थी, जिन्होंने 1907 में माताओं और मातृत्व के सम्मान में मातृ दिवस मनाने का विचार दिया था। राष्ट्रीय स्तर पर इस दिन को 1914 में मान्यता मिली।

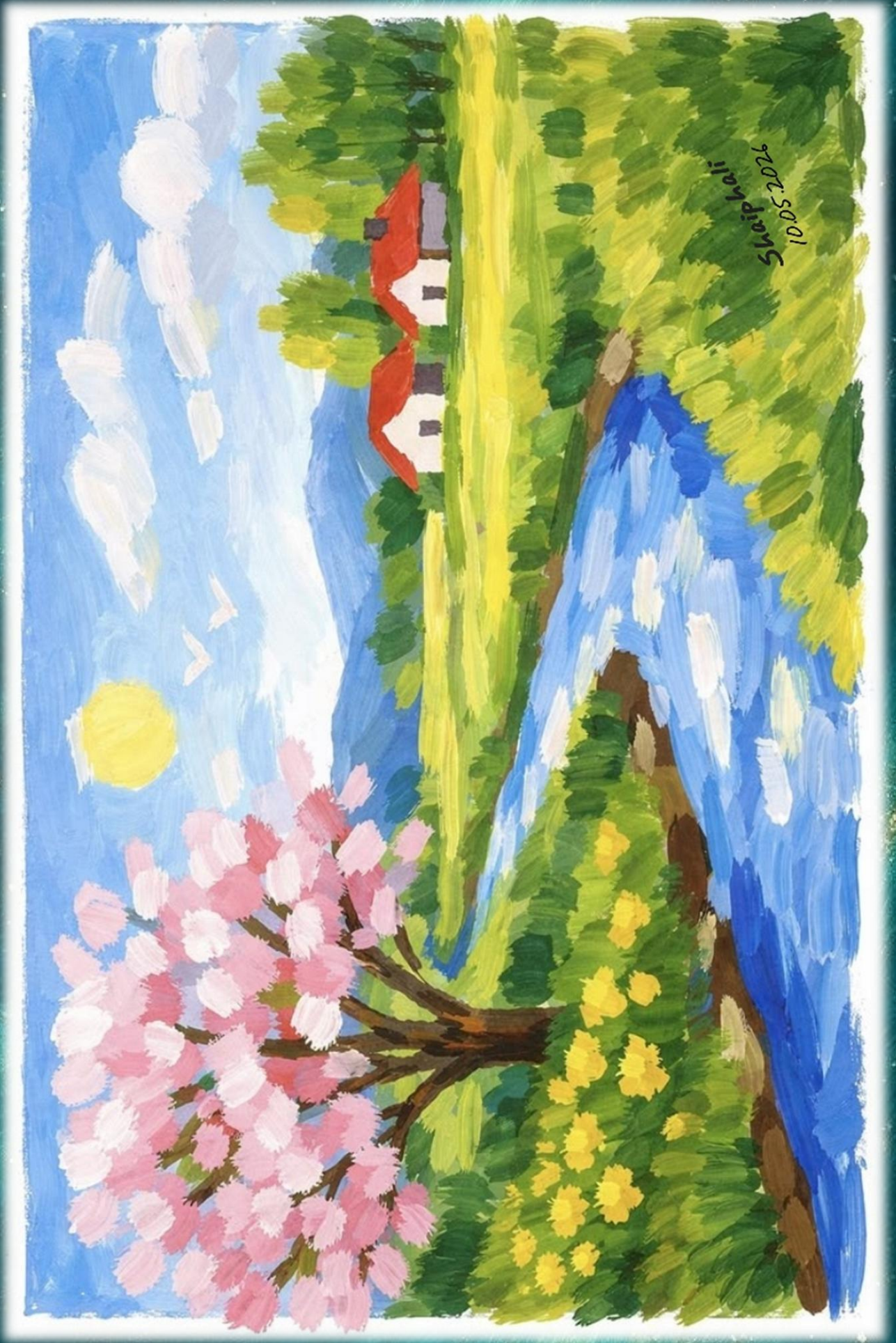
क्र० सं०	तिथि	दिवस का नाम	विवरण
10.	11 मई	राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस	हर साल 11 मई को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया जाता है ताकि हमारे दैनिक जीवन में विज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर किया जा सके और छात्रों को करियर के विकल्प के रूप में विज्ञान को चुनने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। इसी दिन 11 मई 1998 को पोखरण परमाणु परीक्षण 'शक्ति' आयोजित किया गया था।
11.	12 मई	अन्तर्राष्ट्रीय नर्स दिवस	फ्लोरेंस नाइटिंगेल के जन्मदिन की वर्षगांठ के उपलक्ष्य में हर साल 12 मई को अन्तर्राष्ट्रीय नर्स दिवस मनाया जाता है। यह दिन विश्व भर में समाज के प्रति नर्सों के योगदान को भी सम्मानित करता है। इस दिन, अन्तर्राष्ट्रीय नर्स परिषद संगठन हर साल एक अलग विषय पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय नर्स किट का प्रकाशन करता है, जिसका उद्देश्य वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य कर्मियों को शिक्षित और सहायता प्रदान करना है।
12.	15 मई	अन्तर्राष्ट्रीय परिवार दिवस	अन्तर्राष्ट्रीय परिवार दिवस प्रतिवर्ष 15 मई को मनाया जाता है। परिवार समाज की मूलभूत इकाई है। यह दिन परिवारों से संबंधित मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और उन्हें प्रभावित करने वाली सामाजिक, आर्थिक और जनसांख्यिकीय प्रक्रियाओं के बारे में ज्ञान बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है।
		राष्ट्रीय लुप्तप्राय प्रजाति दिवस (मई का तीसरा शुक्रवार)	हर साल मई के तीसरे शुक्रवार को राष्ट्रीय लुप्तप्राय प्रजाति दिवस मनाया जाता है ताकि सभी संकटग्रस्त प्रजातियों के वन्यजीव संरक्षण और पुनर्स्थापन प्रयासों के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाई जा सके। लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम 1973 वन्यजीवों और संकटग्रस्त प्रजातियों के संरक्षण पर केंद्रित है।
13.	16 मई	राष्ट्रीय डेंगू दिवस	भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की अनुशंसा पर यह दिवस (16 मई) मनाया जाता है। डेंगू पूरे देश में व्याप्त है। इस वर्ष कोविड-19 महामारी के कारण लगे लॉकडाउन की वजह से डेंगू के संबंध में जागरूकता अभियान, रैलियां आदि देश में आयोजित नहीं किए जा रहे हैं, लेकिन इन्हें ऑनलाइन माध्यम से प्रसारित किया जा सकता है।
		अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाश दिवस	हर साल 16 मई को, दुनिया भर के लोग अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाश दिवस मनाते हैं। यह दिन भौतिक विज्ञानी और अभियंता थियोडोर मैमन द्वारा 1960 में किए गए पहले सफल लेजर प्रयोग की याद में मनाया जाता है। यूनेस्को का अन्तर्राष्ट्रीय बुनियादी विज्ञान कार्यक्रम (आईबीएसपी) संयुक्त राष्ट्र की ओर से इस दिवस के आयोजन का समन्वय करता है।
		सशस्त्र सेना दिवस (मई का तीसरा शनिवार)	प्रत्येक वर्ष मई के तीसरे शनिवार को सशस्त्र सेना दिवस मनाया जाता है। यह दिन संयुक्त राज्य अमेरिका के सशस्त्र बलों में सेवा देने वाले पुरुषों और महिलाओं को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए मनाया जाता है।

क्र० सं०	तिथि	दिवस का नाम	विवरण
14.	17 मई	विश्व दूरसंचार दिवस	विश्व दूरसंचार दिवस प्रतिवर्ष 17 मई को मनाया जाता है। यह उस दिन की याद दिलाता है जब 17 मई 1865 को पेरिस में पहले अन्तर्राष्ट्रीय टेलीग्राफ सम्मेलन पर हस्ताक्षर किए गए थे और इसी दिन अन्तर्राष्ट्रीय दूरसंचार प्रौद्योगिकी संघ (आईटीयू) की स्थापना हुई थी। इसे विश्व दूरसंचार और अन्तर्राष्ट्रीय समाज दिवस के रूप में भी जाना जाता है। 1969 से यह दिवस प्रतिवर्ष मनाया जाता है।
		विश्व उच्च रक्तचाप दिवस	यह दिवस विश्व उच्च रक्तचाप लीग (डब्ल्यूएचएल) द्वारा प्रतिवर्ष 17 मई को मनाया जाता है। यह दिवस उच्च रक्तचाप के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देता है और लोगों को इस घातक महामारी की रोकथाम और नियंत्रण के लिए प्रोत्साहित करता है।
15.	18 मई	विश्व एड्स टीकाकरण दिवस	विश्व एड्स टीकाकरण दिवस या एचआईवी टीकाकरण जागरूकता दिवस हर साल 18 मई को मनाया जाता है। यह दिन उन हजारों शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों और स्वास्थ्य पेशेवरों के प्रयासों को याद करता है जिन्होंने सुरक्षित और प्रभावी एड्स दवा खोजने की प्रक्रिया में योगदान दिया है। यह समुदायों को एचआईवी टीकाकरण से बचाव के अनुसंधान के महत्व के बारे में शिक्षित करने का भी एक अवसर है।
		अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस	संग्रहालयों और समाज में उनकी भूमिका के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रत्येक वर्ष 18 मई को अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस मनाया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय परिषद (ICOM) ने 1977 में अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस की स्थापना की थी। यह संगठन प्रत्येक वर्ष एक उपयुक्त विषय का सुझाव देता है, जिसमें वैश्वीकरण, सांस्कृतिक अंतर को पाटना और पर्यावरण संरक्षण जैसे विषय शामिल हो सकते हैं।
16.	20 मई	अन्तर्राष्ट्रीय मानव संसाधन दिवस	यूरोपियन एसोसिएशन फॉर पीपल मैनेजमेंट ने 2019 में एचआर दिवस की स्थापना की, जिसका उद्देश्य संगठन के भीतर एचआर पेशेवरों और प्रथाओं द्वारा निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करना और आज के गतिशील कार्यस्थल में एचआर पेशेवरों द्वारा निभाई जाने वाली बदलती मांगों और महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जनता में जागरूकता बढ़ाना और संगठनों की सफलता में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करना है।
17.	21 मई	राष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी दिवस	राष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी दिवस प्रत्येक वर्ष 21 मई को आतंकवादियों द्वारा की गई हिंसा के बारे में जागरूकता फैलाने और साथ ही पूर्व भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी की स्मृति में मनाया जाता है, जिनका निधन इसी दिन हुआ था।
		अन्तर्राष्ट्रीय चाय दिवस	विश्व भर में 21 मई को अन्तर्राष्ट्रीय चाय दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य चाय उद्योग के योगदान को मान्यता देना और इस क्षेत्र में निष्पक्ष व्यापार और निवेश को बढ़ावा देना है। साथ ही, अन्तर्राष्ट्रीय चाय दिवस में चाय और चाय व्यवसाय में काम करने वाले लोगों को भी सम्मानित किया जाता है।

क्र० सं०	तिथि	दिवस का नाम	विवरण
18.	22 मई	जैव विविधता का अन्तर्राष्ट्रीय दिवस	जैव विविधता के मुद्दों के बारे में जागरूकता और समझ बढ़ाने के लिए हर साल 22 मई को जैव विविधता का अन्तर्राष्ट्रीय दिवस मनाया जाता है।
19.	23 मई	विश्व कछुआ दिवस	कछुओं और उनके लुप्त होते आवासों की रक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए यह दिवस प्रतिवर्ष 23 मई को मनाया जाता है। यह दिन एक बेहतर भविष्य का वादा करता है जहां मनुष्य और कछुए शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व में रह सकें।
20.	24 मई	राष्ट्रीय भाई दिवस	ब्रदर्स डे एक अनौपचारिक अवकाश है जो मुख्य रूप से अमेरिका में 24 मई को मनाया जाता है। इस दिन की स्थापना भाई-बहनों के बीच अद्भुत रिश्ते का जश्न मनाने के लिए की गई थी।
21.	25 मई	अफ्रीका दिवस	अफ्रीकी स्वतंत्रता, संप्रभु शासन और पहचान का वार्षिक उत्सव अफ्रीकी मुक्ति दिवस या अफ्रीका दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन 25 मई, 1963 को अफ्रीकी एकता संगठन की स्थापना का प्रतीक है। 1958 में, घाना की राजधानी अकरा में अफ्रीकी मुक्ति दिवस का पहला समारोह आयोजित किया गया था।
		राष्ट्रीय स्मृति दिवस (मई का अंतिम सोमवार)	स्मृति दिवस प्रत्येक वर्ष मई के अंतिम सोमवार को मनाया जाता है। इस वर्ष यह 25 मई को पड़ रहा है। यह दिन शहीद हुए अमेरिकी सैन्य कर्मियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने और उन्हें याद करने के लिए समर्पित है।
22.	26 मई	ईद उल-अदा	ईद-उल-अधा विश्व भर में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण इस्लामी त्योहार है। यह पैगंबर इब्राहिम की कहानी से जुड़ा हुआ है।
23.	30 मई	अन्तर्राष्ट्रीय आलू दिवस	आलू दिवस हर साल 30 मई को मनाया जाता है। यह दिन आलू के छोटे पैमाने और पारिवारिक खेती उत्पादन को बढ़ावा देता है, विशेष रूप से ग्रामीण किसानों, जिनमें महिला किसान भी शामिल हैं, द्वारा किए जाने वाले उत्पादन को, भूख, कुपोषण और गरीबी को कम करने और खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के प्रयासों को समर्थन देता है, और जैव विविधता के संरक्षण और सतत उपयोग में महत्वपूर्ण योगदान देता है।
		गोवा राज्य स्थापना दिवस	भारत के पश्चिमी तट पर स्थित खूबसूरत राज्य गोवा इस वर्ष अपनी 36वीं राज्य स्थापना का जश्न मना रहा है। 1976 में, गोवा विधानसभा ने पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त करने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया था; जिसे बाद में 30 मई, 1987 को मान्यता दी गई।
		हिंदी पत्रकारिता दिवस	हिंदी भाषा का पहला समाचार पत्र, उदंत मार्तंड, 30 मई को प्रकाशित हुआ था। पंडित जुगल किशोर शुक्ला ने 30 मई, 1826 को कलकत्ता से इसे एक साप्ताहिक समाचार पत्र के रूप में शुरू किया था।
24.	31 मई	तंबाकू विरोधी दिवस	तंबाकू विरोधी दिवस या विश्व तंबाकू निषेध दिवस हर साल 31 मई को विश्व भर में मनाया जाता है ताकि लोगों को तंबाकू के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूक और शिक्षित किया जा सके, जिससे हृदय रोग, कैंसर, दांतों की सड़न, दांतों पर दाग लगना आदि जैसी बीमारियां होती हैं।



କଳାକାର
ଅନୁଭାଗ



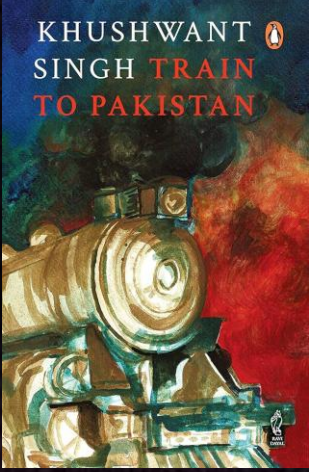
चित्रण: डॉ० शैफाली सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर
वनस्पति विज्ञान विभाग



कठ अनुशासित पुस्तकें



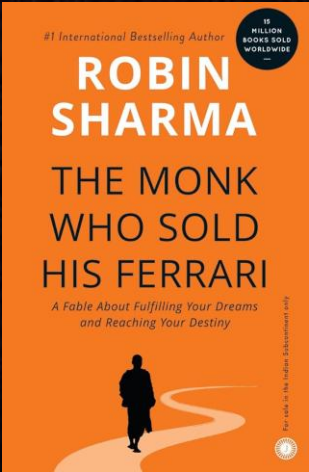
कुछ अनुशंसित पुस्तकें



ट्रेन टू पाकिस्तान

लेखक: खुशवंत सिंह

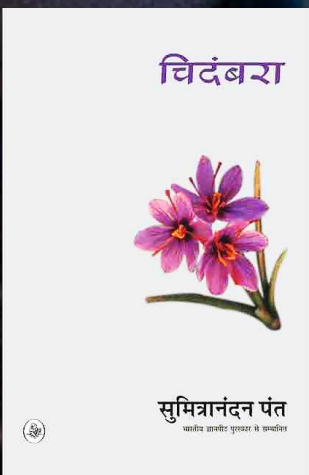
'ट्रेन टू पाकिस्तान' (Train to Pakistan) खुशवंत सिंह द्वारा लिखित 1956 का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है। यह कहानी 1947 में भारत के विभाजन की त्रासदियों को दर्शाती है और बड़े राजनीतिक घटनाक्रमों के बजाय मनो माजरा (Mano Majra) नामक एक छोटे से गाँव पर इसके वास्तविक और अमानवीय प्रभावों का वर्णन करती है।



द मॉन्क हू सोल्ड हिज़ फ़रारी

लेखक: रॉबिन शर्मा

यह कहानी जूलियन मेंटल नाम के एक बेहद सफल लेकिन मानसिक रूप से थके हुए अमेरिकी वकील की है, जो अदालत में दिल का दौरा पड़ने के बाद अपने जीवन से निराश होकर अपनी सारी संपत्ति और पसंदीदा फेरारी कार बेच देता है, और जीवन का असली सच जानने के लिए भारत के हिमालय पर्वतों में 'सिवाना के संतों' की शरण में चला जाता है। वहाँ वह ध्यान, योग और आत्म-नियंत्रण के जरिए अपने मन को वश में करना, जीवन का सही उद्देश्य खोजना, निरंतर आत्म-सुधार (कैटजेन), समय का सदुपयोग, अनुशासन, निस्वार्थ सेवा और वर्तमान में जीने जैसे जीवन के सात अनमोल रहस्य सीखता है। अंत में, वह पूरी तरह बदलकर वापस लौटता है और अपने पुराने दोस्त जॉन को यह ज्ञान देकर संदेश देता है कि असली सुख और शांति बाहरी धन-दौलत में नहीं, बल्कि हमारे भीतर के आत्मिक विकास और सकारात्मक विचारों में छिपी होती है।



चिदंबरा

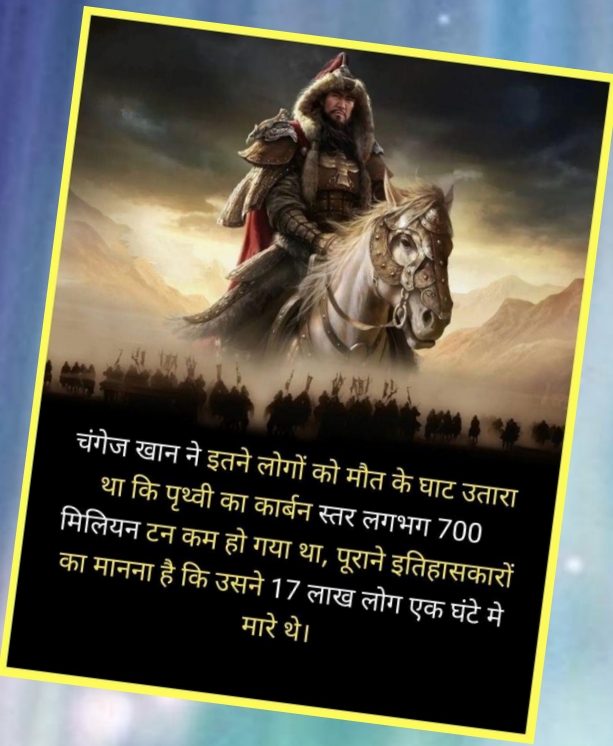
लेखक: सुमित्रानंदन पंत

'चिदंबरा' छायावाद के महान कवि सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित एक कालजयी कविता संग्रह है, जिसके लिए उन्हें वर्ष 1968 में भारतीय साहित्य के सर्वोच्च 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था। इस प्रतिष्ठित सम्मान को पाने वाले वे हिंदी के पहले रचनाकार थे। साहित्यिक दृष्टि से 'चिदंबरा' कवि के प्रगतिशील मार्क्सवादी विचारों से लेकर महर्षि अरविंद के आध्यात्मिक दर्शन ('अरविंद दर्शन') तक के वैचारिक विकास को दर्शाती है।

देश दुनिया के कुछ

रोचक तथ्य

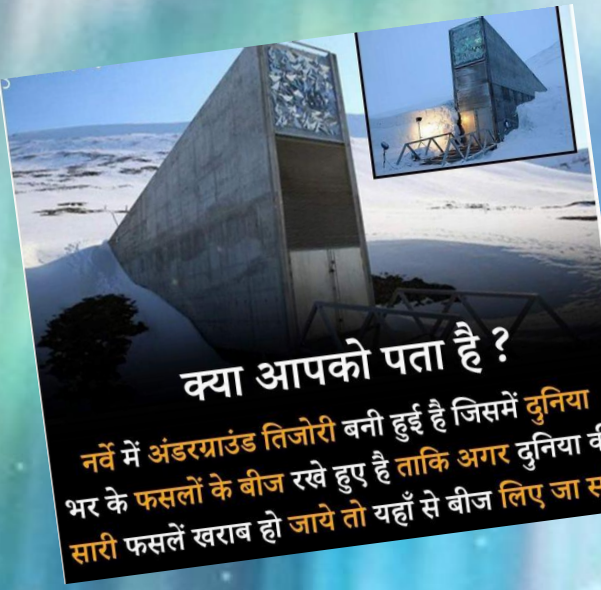




चंगेज खान ने इतने लोगों को मौत के घाट उतारा था कि पृथ्वी का कार्बन स्तर लगभग 700 मिलियन टन कम हो गया था, पुराने इतिहासकारों का मानना है कि उसने 17 लाख लोग एक घंटे में मारे थे।

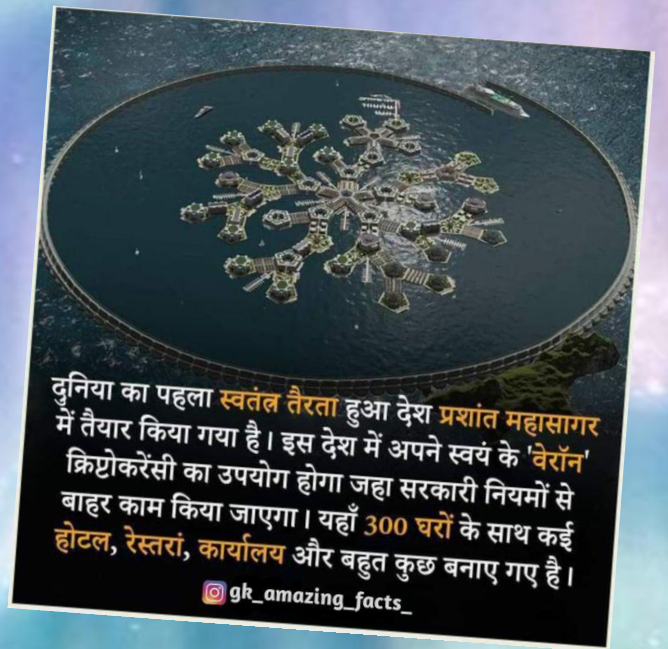


क्या आप जानते हैं ताजमहल में कोई रोशनी नहीं रहती है और पिछले 400 सालों से यहाँ पर रात को अंधेरा ही रहता है, जिसके पीछे का कारण कोई नहीं जानता। एक बार जब सरकार ने ताजमहल के बगीचे में बतियां लगाने की कोशिश की, तब रात को वहाँ पर बगीचे की सभी बतियाँ टूट गईं और दूसरी बार भी बिल्कुल ऐसा ही हुआ।



क्या आपको पता है ?

नर्वे में अंडरग्राउंड तिजोरी बनी हुई है जिसमें दुनिया भर के फसलों के बीज रखे हुए हैं ताकि अगर दुनिया की सारी फसलें खराब हो जाये तो यहाँ से बीज लिए जा सके



दुनिया का पहला स्वतंत्र तैरता हुआ देश प्रशांत महासागर में तैयार किया गया है। इस देश में अपने स्वयं के 'वेरॉन' क्रिप्टोकॉरेंसी का उपयोग होगा जहाँ सरकारी नियमों से बाहर काम किया जाएगा। यहाँ 300 घरों के साथ कई होटल, रेस्तरां, कार्यालय और बहुत कुछ बनाए गए हैं।

[@gh_amazing_facts_](#)

ऐसा विज्ञापन देखा है कभी

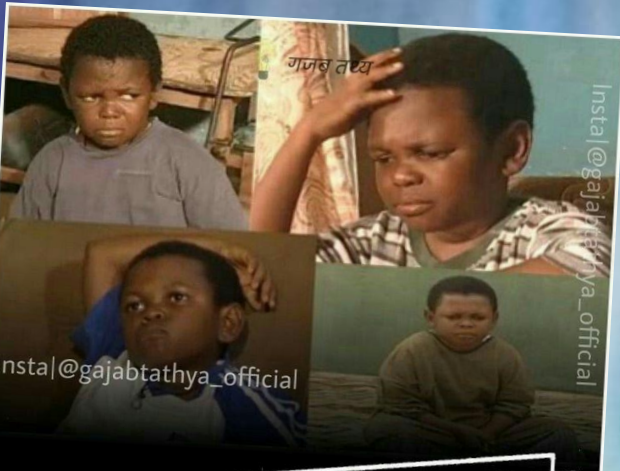
----- Moneyland YT -----



चीन के शांगहाई शहर में एक कंपनी ने QR कोड को ड्रोन से शहर के ऊपर उड़ाया इसका मकसद ये था कि कोई भी अपने स्मार्टफोन से इसे स्कैन करके उस कंपनी की वीडियो गेम डाउनलोड कर सकता था QR कोड को हवा में देख हजारों लोगो ने इसे अपने फोन से स्कैन किया और गेम डाउनलोड की। भविष्य में इस तरह के कई एडवर्टाइजिंग करने के आइडियाज देखने को मिलेंगे अपने विचार कमेंट में बताएं



Frek Selak को दुनिया का 'सबसे भाग्यशाली व्यक्ति' माना जाता है जो ट्रेन हादसे, प्लेन हादसे, बस के नदी में गिरने, दो बार कार विस्फोट, बस से टक्कर और गाड़ी के 300 फुट ऊँचे चट्टान से गिरने पर भी बच गए थे। 2003 में उन्होंने 1 मिलियन डॉलर की लॉटरी भी जीती थी।



Insta|@gajabtathya_official

Insta|@gajabtathya_official

ये हैं osita iheme जो नाइजीरिया के सुपरस्टार हैं जिन्होंने हमें अनगिनत memes दिए। वास्तव में ये 38 साल के हैं लेकिन दुर्लभ बीमारी की वजह से इनकी शकल बच्चे जैसी है।



Insta|@gajabtathya_official

Adam Rainer ऐसे व्यक्ति थे जो बौने और लंबे दोनों रह चुके हैं। 18 साल की उम्र तक उनकी लंबाई 3 फीट 7 इंच थी, लेकिन इसके बाद 51 की उम्र तक आते आते वे 7 फीट 8 इंच के हो गए थे।



Insta|@gajabtathya_official

दुनिया का सबसे डरावना जंगल 'होया बस्यू' है, जो की रोमानिया में है। यहां के निवासियों का मानना है कि इस जंगल से रोने की और अजीबों-गरीब डरावनी आवाजें आती हैं। यहां पर Razz 4 फिल्म की शूटिंग होने वाली थी लेकिन यहां की सरकार ने इसकी परमिशन नहीं दी।



@EkKadamSafaltaKiOrrGk

इस शहिद की आत्मा आज भी देती है पहरा।

1966 में भारतीय सेना में भर्ती हुए जवान जिनकी 2 साल बाद सिक्किम की एक दुर्घटना में मौत हो गई। 3 दिन तलाश के बाद भी उनका शव नहीं मिला तो उन्होंने अपने एक दोस्त के सपने में आकर खुद अपने शव की जगह बताई। और अगले दिन उनका शव उसी जगह मिला, फिर उनका अंतिम संस्कार किया गया। इस घटना के बाद उनके प्रति लोगों की आस्था बढ़ने लगी और उनके चमत्कार को देखते हुए उनके नाम एक मंदिर भी बनाया गया जिसका नाम बाबा हरबजन सिंह मंदिर है। मंदिर के अंदर उनकी फोटो और उनका समान रखा गया है। सैनिकों का मानना है हरबजन सिंह जी की आत्मा किसी भी खतरे के होने से पहले ही उन्हें आगाह कर देती है। उन्हें महसूस होने लगता है। ऐसे वीर को नमन। जय हिंद।



नटवरलाल को वेश बदलने में महारत हासिल थी उसने एक बार राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद के फर्जी हस्ताक्षर कर ठगी की थी। नटवरलाल का हुनर किसी के भी नकली हस्ताक्षर करने में था। नटवरलाल का दावा था कि यदि सरकार उन्हें इजाजत दे तो वो ठगी के माध्यम से भारत का विदेशी कर्ज उतार सकते हैं।



रोचक तथ्य

दुबई के अमीर शेख 'मुहम्मद बिन राशिद' अपने हर जन्मदिन पे किसी एक गरीब बच्ची (जिसका जन्मदिन भी उसी दिन होता है) के साथ मिल के अपना जन्मदिन मनाते हैं। और गिफ्ट के तौर पे उस बच्ची को इतना पैसा दे देते हैं कि जिससे वो बच्ची और उसका परिवार सारी जिंदगी ऐशो आराम से जी सकते हैं।

देश में 2026 की आगामी परीक्षाएँ

- **रेलवे भर्ती बोर्ड (RRB) भर्ती:** तकनीशियन (ग्रेड-1 सिग्नल और ग्रेड-III) के 6,565 पदों पर भर्ती चल रही है और इसके लिए ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि **29 जुलाई 2026** है।
- **सैनिक स्कूल नगरोंटा (जम्मू):** इस संस्थान में टीजीटी (अंग्रेजी) और अन्य विभिन्न शिक्षण व गैर-शिक्षण पदों पर आवेदन करने की अंतिम तिथि **11 जुलाई 2026** है।
- **दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड (DSSSB):** ग्रुप बी और ग्रुप सी के विभिन्न प्रशासनिक व तकनीकी 1,979 पदों पर ऑनलाइन फॉर्म भरे जा रहे हैं, जिसकी आखिरी तारीख **15 जुलाई 2026** है।
- **दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड (DSSSB):** ग्रुप बी और ग्रुप सी के विभिन्न प्रशासनिक व तकनीकी 1,979 पदों पर ऑनलाइन फॉर्म भरे जा रहे हैं, जिसकी आखिरी तारीख **15 जुलाई 2026** है।

अधिक विवरण कैसे प्राप्त करें

- **रोजगार समाचार:** रोजगार समाचार आधिकारिक अधिसूचनाओं और उनकी तिथियों के लिए एक प्राथमिक स्रोत है।
- **परीक्षा पोर्टल:** करियर 360 और करियर पावरजैसी प्रतिष्ठित वेबसाइटें भी सरकारी नौकरियों के बारे में अद्यतन जानकारी प्रदान करती हैं।

उत्तराखण्ड में 2026 की आगामी परीक्षाएँ

- **UKSSSC अधीनस्थ न्यायालय भर्ती:** उत्तराखण्ड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा राज्य के दीवानी और कुटुंब न्यायालयों (Civil & Family Courts) में कनिष्ठ सहायक (Junior Assistant) और आशुलिपिक ग्रेड-1 (Stenographer) के 398 पदों पर भर्ती प्रक्रिया जारी है। इसके लिए ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि **06 जुलाई 2026** है।
- **एम्स ऋषिकेश (AIIMS Rishikesh) भर्ती:** एम्स कॉमन रिक्रूटमेंट एग्जाम (CRE-5) के माध्यम से ऋषिकेश सहित विभिन्न पदों पर ग्रुप बी और सी के गैर-शिक्षण पदों के लिए आवेदन की अंतिम तिथि **03 जुलाई 2026** है।

अपडेट कैसे रहें

सबसे सटीक और विस्तृत जानकारी के लिए, आधिकारिक वेबसाइटों पर जाना सबसे अच्छा है:

- यूकेपीएससी: psc.uk.gov.in
- यूकेएसएसएससी: sssc.uk.gov.in

पर्वत प्रदेश में पावस

पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश,
पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश।

मेखलाकर पर्वत अपार
अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार-बार
नीचे जल में निज महाकार,
जिसके चरणों में पला ताल
दर्पण सा फैला है विशाल!

गिरि का गौरव गाकर झर-झर
मद में लनस-नस उत्तेजित कर
मोती की लडियों सी सुन्दर
झरते हैं झाग भरे निर्झर!

गिरिवर के उर से उठ-उठ कर
उच्चाकांक्षायों से तरूवर
है झाँक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष, अटल, कुछ चिंता पर।

उड़ गया, अचानक लो, भूधर
फड़का अपार वारिद के पर!
रव-शेष रह गए हैं निर्झर!
है टूट पड़ा भू पर अंबर!

धँस गए धरा में सभय शाल!
उठ रहा धुआँ, जल गया ताल!
यों जलद-यान में विचर-विचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल!

- सुमित्रानंदन पन्त जी को शत-शत नमन!

“सा विद्या या विमुक्तये।”

